सत्यमेव जयते

मरुलेखा
वातायन

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वर्ष : 29 हिन्दी छमाही पत्रिका अंक : 75-76 (संयुक्तांक)

Audit Diwas 2025
CAG Awards 2025
BIR MALLICK
CAG (DEFENCE)
A. M. BAJAJ
DY. CAG

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
राजस्थान, जयपुर

मरुलेखा वातायन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

संपादक मण्डल

✻ संरक्षक ✻

श्री प्रवीन्द्र यादव

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर

परामर्शदाता

श्री अक्षय मोहन खंडारे

वरिष्ठ उप-महालेखाकार
(प्रशासन)

परामर्शदाता

श्री शुभम सिन्हा

उप-महालेखाकार
(लेखा)

प्रधान संपादक

डॉ. सुभाष चंद यादव

सहायक निदेशक

सह-संपादक

श्री अक्षय कुलहरी

कनिष्ठ अनुवादक

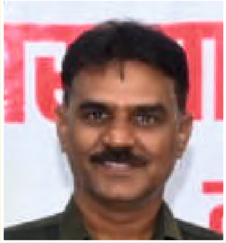

उप-संपादक

श्री राजकुमार मिश्रा

सहायक पर्यवेक्षक

उप-संपादक

श्री मनोज गोयल

सहायक पर्यवेक्षक

सत्यमेव जयते

मरुलेखा

वातायन

वर्ष : 29 ✻ अंक : 75-76 (संयुक्तांक)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

अप्रैल-2025 से मार्च-2026

प्रकाशक :

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
राजस्थान
जयपुर - 302 005

सत्यमेव जयते

प्रवीन्द्र यादव
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.)
राजस्थान, जयपुर

✻ संरक्षक की कलम से ✻

कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के 75-76वें संयुक्तांक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय परिवार की सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति और राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण का जीवंत उदाहरण है। कार्यालयीन कार्यों की व्यस्तता के बीच कर्मचारियों का साहित्य, संस्कृति और भाषा के क्षेत्र में योगदान देना न केवल प्रशंसनीय है, बल्कि यह हमारे संस्थागत जीवन के सशक्त मानवीय पक्ष एवं राजभाषा के प्रति जागरूकता को भी अभिव्यक्त करता है।

राजभाषा हिंदी हमारे राष्ट्रीय एकत्व और संवैधानिक मूल्यों की प्रतीक है। इसका प्रयोग प्रशासनिक कार्यों में दक्षता के साथ-साथ आपसी संवाद और सहभागिता को भी सुदृढ़ बनाता है। इस दिशा में ''मरुलेखा वातायन'' जैसी पहल निश्चित ही हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके प्रभावी अनुपालन में सहायक सिद्ध होगी।

मैं संपादक मंडल एवं सभी योगदानकर्ताओं को उनके परिश्रम, रचनात्मकता और समर्पण के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति करते हुए हमारे कार्यालय परिवार की सृजनशील परंपरा, एकता और गौरव का प्रतीक बनेगी। इसी आकांक्षा और विश्वास के साथ 'मरुलेखा वातायन' का यह अंक आपको समर्पित है।

प्रवीन्द्र यादव

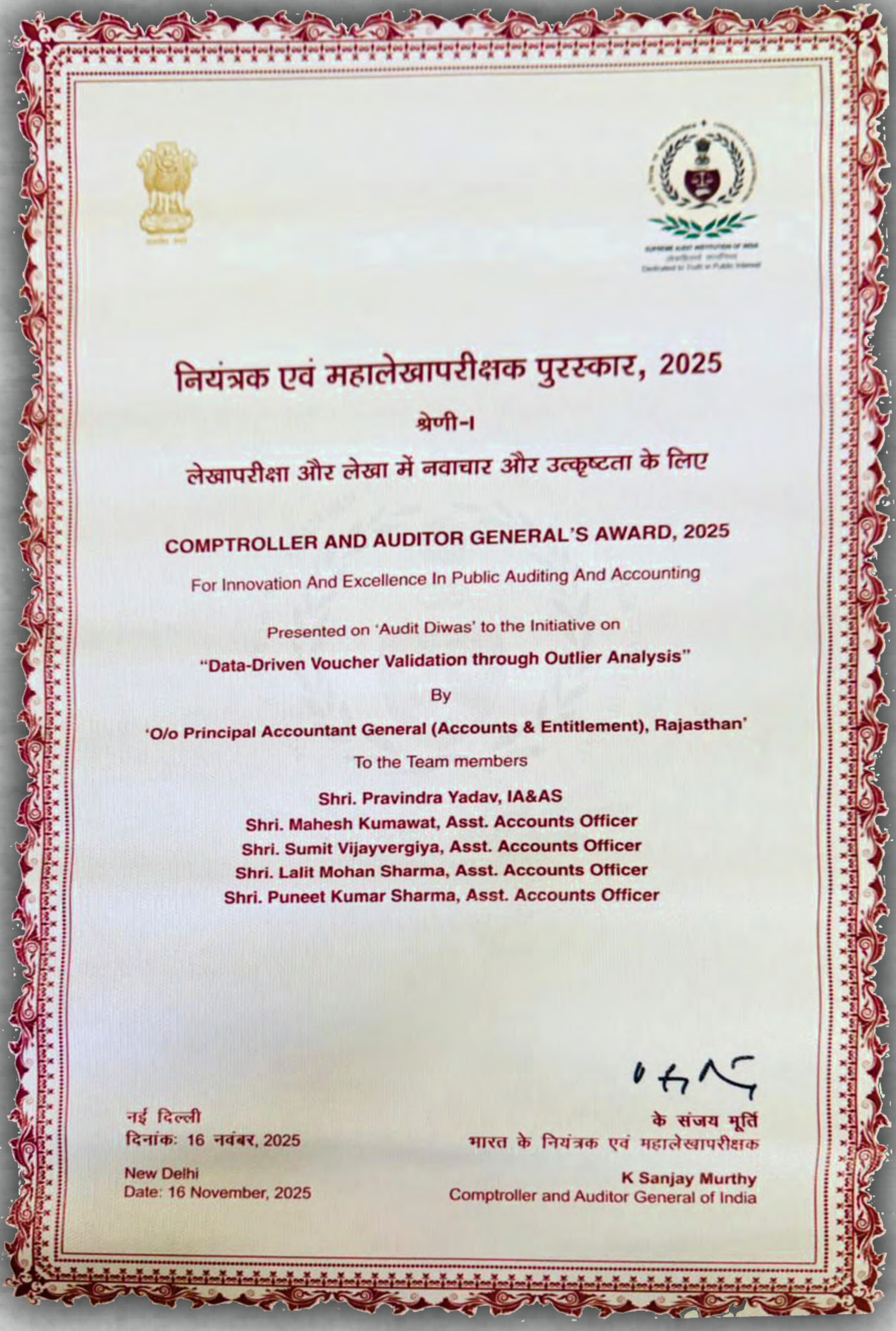

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक पुरस्कार, 2025

श्रेणी-I

लेखापरीक्षा और लेखा में नवाचार और उत्कृष्टता के लिए

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL'S AWARD, 2025

For Innovation And Excellence In Public Auditing And Accounting

Presented on 'Audit Diwas' to the Initiative on

"Data-Driven Voucher Validation through Outlier Analysis"

By

'O/o Principal Accountant General (Accounts & Entitlement), Rajasthan'

To the Team members

Shri. Pravindra Yadav, IA&AS
Shri. Mahesh Kumawat, Asst. Accounts Officer
Shri. Sumit Vijayvergiya, Asst. Accounts Officer
Shri. Lalit Mohan Sharma, Asst. Accounts Officer
Shri. Puneet Kumar Sharma, Asst. Accounts Officer

नई दिल्ली
दिनांक: 16 नवंबर, 2025

New Delhi
Date: 16 November, 2025

के संजय मूर्ति
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

K Sanjay Murthy
Comptroller and Auditor General of India

✻ अनुक्रमणिका ✻

क्र.सं.	शीर्षक		रचनाकार	पृष्ठ सं.
	संरक्षक की कलम से			
	संपादकीय			
	आपके पत्र			
1.	सुंदरकांड की सूक्तियों में छिपे संदेश	लेख	हनुमान गुप्ता	11
2.	'भीष्म-वध' पांडवों का क्रूरतम पक्ष....	लेख	डॉ. सुभाष चंद यादव	14
3.	लोकतंत्र में मीडिया	लेख	राजेन्द्र प्रसाद	18
4.	जलवायु परिवर्तन	लेख	अभय सिंह जाजड़ा	20
5.	राजस्थान में पर्यटन	लेख	शंकर लाल	22
6.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई): मानव जीवन में क्रांति, संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ	लेख	मनोज कुमार	24
7.	दर्शनशास्त्र: ज्ञान, तर्क और जीवन का आधार	लेख	अक्षय कुलहरी	29
8.	मिष्ठान प्रेमी देश मेरा (अतुल्य भारत)	लेख	मुकुल दीक्षित	33
9.	आजकल की स्त्री	कविता	इति शर्मा	37
10.	टूटते रिश्तों में मोबाइल की भूमिका	लेख	सुनिता गोयल	40
11.	स्वास्थ्य एवं हमारी दिनचर्या	लेख	संगीता गुप्ता	43
12.	एक शमा	कविता	तरुण सोनी	45
13.	मेरे जीवन की रोचक यात्रा ''अण्डमान''	संस्मरण	मदन लाल कोली	46

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की अभिव्यक्ति से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' का 75-76वां संयुक्तांक आपके हाथों में प्रस्तुत है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा तथा राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण को एक मंच प्रदान करने का प्रयास है।

'मरुलेखा वातायन' का यह अंक आपके समक्ष एक नई ऊर्जा और संकल्प के साथ प्रस्तुत है। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी कार्य-संस्कृति का प्राणतत्व है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग से न केवल प्रशासनिक कार्यों में सुगमता आती है, बल्कि यह हमारे कार्यालयीन परिवेश में एक अपनत्व और शुचिता का भी संचार करती है। जिस प्रकार एक वटवृक्ष अपनी जड़ों से शक्ति प्राप्त कर आकाश की ऊंचाइयों को छूता है, ठीक उसी प्रकार हमारी भाषाई जड़ें हमें अपने इतिहास और मूल्यों से जोड़े रखती हैं। संवैधानिक मर्यादाओं का पालन करते हुए हिंदी को अपनाना हमारा केवल दायित्व ही नहीं, बल्कि एक गौरवशाली विरासत को संजोने का अनुष्ठान है। यह पत्रिका इसी अनुष्ठान की एक जीवंत कड़ी है जो हमारे सामूहिक प्रयासों और रचनात्मक अभिव्यक्ति को पोषित करती है।

लेखनी की शक्ति असीमित है। जब हम अपनी भाषा में कार्य करते हैं तो वह अधिक प्रभावी और जनोन्मुखी हो जाता है। आशा है कि इस अंक के माध्यम से आप सभी न केवल लाभान्वित होंगे, बल्कि अपनी मौलिक रचनाओं और हिंदी के निरंतर प्रयोग द्वारा 'मरुलेखा वातायन' की इस यात्रा को और अधिक समृद्ध बनाएंगे। आपके सुझाव और सक्रिय सहभागिता सदैव हमारी प्रेरणा बने रहेंगे।

आपके मूल्यवान सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

आभार सहित।

डॉ. सुभाष चंद यादव

सहायक निदेशक

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग, कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय व्यय, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के 73- 74वें संयुक्तांक की ई - प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर हनुमान गुप्ता का आलेख 'सुंदरकांड की शुक्तियों का दैनिक जीवन में संदेश', डॉ. सुभाष चंद यादव का आलेख 'राम सुजस सुखमूल', श्रुति शर्मा का यात्रा वृतांत 'उत्तराखंड के चार धाम', राजेश कुमार आनंद का आलेख 'जीवन के आयाम', विनय नामा की कविता 'जुड़वा बहनें' और संजीव कुमार अटोर्थी की कविता 'एक सच्ची घटना' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका मरुलेखा वातायन इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा-वाणिज्यिक का कार्यालय, बेंगलुरु

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'मरुलेखा वातायन' के 73-74वें संयुक्तांक अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप श्री राजेन्द्र प्रसाद स्वामी का लेख ''बंदिशे और बोझ'', सुश्री इति शर्मा की कहानी ''प्यारी बेटियां'', श्री पद्म चन्द गाँधी का लेख ''हमारे व्यक्तित्व का आइना है-हमारी वाणी, हमारी भाषा'', श्रीमती शिप्रा व्यास का लेख ''हमारे बुजुर्ग हमारी धरोहर'' आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

सहायक निदेशक (राजभाषा)

महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ, पटना, बिहार

आपके कार्यालयीन हिंदी पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के 73-74वां संयुक्तांक ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक मुद्रण, सम्पादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं; विशेषकर, निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं अत्यधित प्रशंसनीय हैं- बंदिशें और बोझ रचनाएँ-श्री राजेन्द्र प्रसाद स्वामी, डर लगता है-श्री मनोज कुमार, हमारे बुजुर्ग-हमारी धरोहर-श्रीमती शिप्रा व्यास, परवरिश-श्री महेश कुमावत।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक), त्रिपुरा, अगरतला

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका प्राप्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं हैं। इसकी साज-सज्जा भी काफी मनोहर है। हिन्दी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए पत्रिका के संपादक मण्डल के सदस्य बधाई के पात्र हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामनाएँ प्रेषित हैं।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/राजभाषा

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के 73-74वें संयुक्तांक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के आवरण पृष्ठ में जलमहल, जयपुर अत्यधिक स्वर्ण महल जैसा प्रतीत होता है। पत्रिका में प्रकाशित डॉ. सुभाष चंद यादव की रचना ''राम सुजस सुखमूल'', श्री महेश कुमावत की रचना ''परवरिश'', श्री राजेंद्र प्रसाद स्वामी की रचना ''बंदिशें और बोझ'', श्री राम लाल मीना की रचना ''न्याय प्रणाली में प्रौद्योगिकी का समावेश'' एवं श्री राजेश कुमार आनंद की रचना ''जीवन के आयाम'' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा-वाणिज्यिक का कार्यालय, बेंगलुरु

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'मरुलेखा वातायन' के 73-74वें संयुक्तांक अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप श्री राजेन्द्र प्रसाद स्वामी का लेख ''बंदिशे और बोझ'', सुश्री इति शर्मा की कहानी ''प्यारी बेटियां'', श्री पद्म चन्द गाँधी का लेख ''हमारे व्यक्तित्व का आइना है-हमारी वाणी, हमारी भाषा'', श्रीमती शिप्रा व्यास का लेख ''हमारे बुजुर्ग हमारी धरोहर'' आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सुंदरकांड की सूक्तियों में छिपे संदेश

हनुमान गुप्ता
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

नमस्कार, मरुलेखा वातायन के पूर्व अंक 73-74 में प्रकाशित मेरा लेख 'सुन्दरकाण्ड की सूक्तियों का दैनिक जीवन में संदेश' पर प्राप्त आपकी सकारात्मक प्रतिक्रियाओं एवं डॉ. सुभाष चन्द यादव, सहायक निदेशक (राजभाषा) के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा ने मुझे 'सुन्दरकाण्ड' में छिपी हुई चन्द अन्य शिक्षाओं पर लिखने को प्रेरित किया है। 'सुन्दरकाण्ड' में आध्यात्मिकता तथा रहस्यात्मकता का स्वर्णिम संयोग दिखाई पड़ता है।

जब मैं यह लेख लिख रहा था उस समय संसद में 'पहलगाम हमले' ओर 'आपरेशन सिन्दुर' पर मैराथन बहस चल रही थी। संसद में अपनी बात रखते हुऐ हमारे रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने 'सुन्दरकाण्ड' की एक चौपाई का उल्लेख किया कि 'जिन्ह मोहे मारे, तिन्ह मैं मारे' अर्थात जिन आतंकवादियों ने हमारे निर्दोष नागरिकों को मारा, हमने केवल उनके ठिकानों पर ही हमला किया है।' उक्त वाक्य सुनकर मुझे लगा कि हमारे यह पवित्र ग्रन्थ ना केवल आम जनता को, अपितु शासन में बैठे हुए हमारे राजनेताओं, हमारी विदेश निति एवं हमारे खुफिया तंत्र को भी मार्गदर्शन प्रदान करता है, अतः मैंने विचार किया कि सुन्दरकाण्ड की कुछ चौपाइयों व दोहों का विवेचन किया जाए, जो हमें उक्त कार्यों में दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं।

1. गुप्तचर या दूत के गुण व काम करने का तरीका-

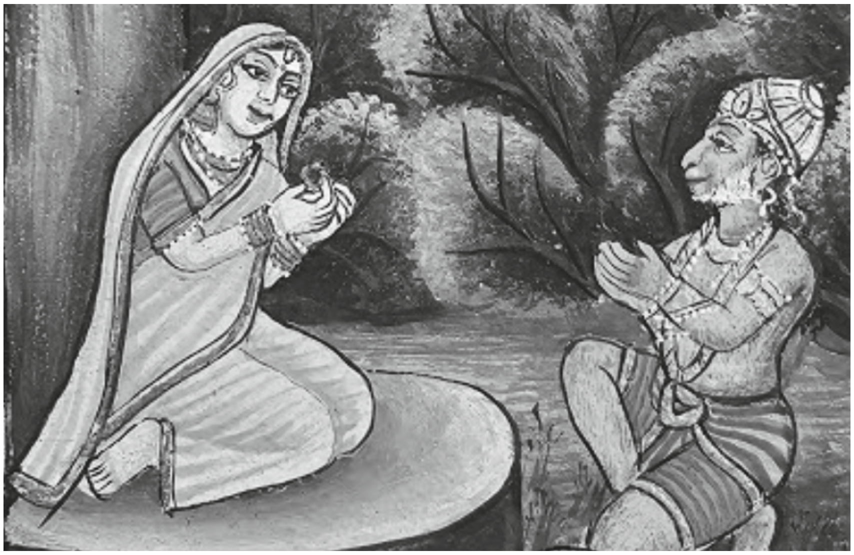

हनुमान जी मशक का रूप धारण करके लंका में प्रवेश करते हैं, पूरे लंका नगर और उसकी सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी प्राप्त करते हैं, विभीषण जी के रूप में अपनी सहायता हेतु उपयोगी व्यक्ति की तलाश करते हैं तथा उसे अपने तथा अपने प्रभू के गुणों से अवगत कराते हुए अपनी सहायता करने हेतु राजी करते हैं। सीताजी की खोज कर उन्हें भगवान राम की निशानी अंगूठी प्रदान करते हैं। अगूंठी को

देखकर भी सीताजी को यकीन नहीं होता है, वे सोचती हैं कि कहीं यह राक्षस की माया तो नहीं है। ऐसे समय पर हनुमान जी एक चौपाई सुनाते हैं-

''**रामदूत मैं मातु जानकी, सत्य सपथ करुणानिधान की।**' जिसे सुनते ही सीता जी को विश्वास हो जाता है कि हनुमान जी वास्तव में भगवान राम के दूत हैं।

इस चौपाई में 'करुणा निधान' शब्द को हनुमान जी ने गुप्त शब्द के रूप में उपयोग किया है। जिसे सुनते ही सीताजी को विश्वास हो गया कि हनुमान जी वास्तव में प्रभु श्रीराम के दूत हैं। 'करुणा निधान' शब्द को गुप्त शब्द इसलिए कहा गया है क्योंकि पूरी रामचरित मानस में यह शब्द केवल 2 बार ही प्रयोग में आया है। प्रथम बालकाण्ड में जब सीता स्वयंवर से पूर्व गौरी पूजन को गई थी तब पार्वती माता ने आशीर्वाद देते हुए कहा था 'करुणा निधान सुजान सील सेनहू जानत रावरो.... तथा दूसरी बार हनुमान जी द्वारा सुन्दरकाण्ड में।

शिक्षा- गुप्तचर या दूत को अपनी बात पहुंचाने हेतु गुप्त शब्द निश्चित करना चाहिए।

गुप्तचर यदि दुश्मन देश या राजा द्वारा पकड़ में आने पर कैसा व्यवहार करें इस संबंध में सुन्दरकाण्ड में निम्न चौपाईयां/दोहा लिखे गये हैं-

1. रावण के सामने अपने प्रभु की प्रशंसा करना-

जाके बल लवलेस ते जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहुँ प्रिय नारि।।

2. रावण की कमजोरी उजागर करना-

जानऊँ मैं तुम्हारि प्रभुताई, सहसबाहु सन परी लराई।
समर बालि सन करि जसुपावा, सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा।

3. प्रभु की उदारता का वर्णन करना-

पुनत पाल रघुनायक करुणा सिंधु खरारि।
गये सरन प्रभु राखि है सब अपराध बिसारि।।

शिक्षा– राजदूत या गुप्चर यदि दुश्मन देश की पकड़ में आ जाते हैं तो उन्हें कुटनीति का सहारा लेना चाहिए, हमेशा अपने देश की तारीफ करना दुश्मन देश की कमजोरियों यथा पूर्व में उनकी हार का वर्णन करना चाहिए। साथ ही अपने देश की उदारता, विश्वबन्धुतव की भावना आदि का वर्णन करना चाहिए।

शरणार्थी और घुसपेठियों में अन्तर करना तथा उनके साथ यथायोग्य व्यवहार करना। यह ज्ञान भी हमें सुन्दरकाण्ड में मिलता है। पिछले दिनों पाकिस्तान से आए हिन्दू शरणार्थियों को नागरिकता प्रदान करने तथा रोहिंग्या, बांग्लादेशी, पाकिस्तानी घुसपेठियों को देश से बाहर निकालने की कार्रवाही भी इसी आधार पर की गई लगती है।

शरणागत की रक्षा करने के बारे में बताया गया है–

दोहा–43– **सरनागत कहुं जे तजहीं निज अनहित अनुमानि।**
ते नर पांवर पापमय तिन्हहि विलोकत हानि।।

अर्थात जो मनुष्य अपने अति का अनुमान करके शरण में आये हुए का त्याग कर देते हैं, वे पापमय है, उनको देखने में भी हानि है।

चौपाई– **जो सभीत आवा ससाई, रखिहुं ताही प्रान की नाई**

अर्थात भगवान राम कहते हैं कि जो व्यक्ति भयभीत होकर (प्रताडित होकर) शरण में आया है तो उसे प्राणों की तरह रखूंगा।

इसी प्रकार घुसपेठियों के बारे में भी लिखा गया है कि

चौपाई– **जबही विभिषन प्रभु पहिं आये। पाछे राव दूत पठाये।।**
चौपाई– **कह सुग्रीव सुनहु सब वानर, अंग भंग कर पठवहुँ निसिचर।**

अर्थात जब रावण द्वारा विभिषण जी के पीछे–पीछे अपने दूत अर्थात घुसपेठिये भेजे, वे सुग्रीव की सेना में वानर रूप धर कर जानकारी प्राप्त कर रहे थे, जब उनका गुप्त भेष उजागर हुआ और पता चला कि ये तो रावण के गुप्तचर हैं, तब सुग्रीव जी ने सभी वानरों को निर्देश दिए कि इन राक्षसों के अंग–भंग करके वापस रावण के पास भिजवा दो।

'भीष्म-वध' पांडवों का क्रूरतम पक्ष....

डॉ. सुभाष चंद यादव
सहायक निदेशक
अध्येता: श्रीरामचरितमानस

महाभारत का नाम आते ही भगवान कृष्ण की दिव्य मूरत सम्मुख आ जाती है, उसके समानान्तर गहराई से विचार करने पर महाभारत एक दुर्दांत युग प्रतिबिंबित होता है। चाहे हम पांडव पक्ष की बात करें या कौरव पक्ष की चर्चा करें, बर्बरता दोनों पक्षों में कूटकूट कर भरी हुई प्रतीत होती है। अंतर केवल इतना है कि कौरव पक्ष की बर्बरता को कथाकार द्वारा दिलचस्पी के साथ विस्तार दिया गया है जबकि पांडव पक्ष की बर्बरता को न केवल न्यायसंगत सिद्ध कर दिया गया है बल्कि भावनात्मक पक्ष को भी उस जगह गौण कर दिया गया है।

> मुझे पांडव पक्ष में केवल एक ही अच्छाई नजर आती है और वो है 'उनके पक्ष में श्रीकृष्ण का शामिल होना' इस तथ्य को यदि छोड़ दिया जाए तो पांडव पक्ष की तरफ कोई सहानुभूति पक्ष दिखाई नहीं देता। उनके कृत्यों पर गूढ़ दृष्टि डाली जाए तो वहाँ भी कोई दूध का धुला हुआ नहीं है। खामियाँ उनमें भी कौरव पक्ष के समानान्तर मौजूद हैं। जो खामियां महाभारतकार ने कौरवपक्ष में प्रस्तुत की हैं; वे स्पष्ट दिखाई देती हैं जबकि पांडव पक्ष की खामियों का संधान किए जाने की जरूरत है।

बहुत से तथ्य होते हैं जिन्हें विजेता पक्ष महाकाव्य कथानक (इतिहास लेखन की तत्कालीन साहित्य पद्धति) में अपनी लोकप्रियता को ठेस ना पहुंचाते हुए प्रस्तुत करवाता है। युद्ध में प्रदर्शित क्रूरता को ध्यान में रखकर विचार करें तो हो सकता है, तथ्य तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किए गए हों अथवा संभावना यह भी है कि कथा का मूल-सूत्र ही इस प्रकार से पिरोया गया हो कि समकालीन युग के प्रत्यक्ष दृष्टाओं के बाद भावी पीढ़ियाँ अपनी सहानुभूति विजेता पक्ष की तरफ इस प्रकार बनाए रखे कि उन्हें उनका शासक एक छीनी हुई सत्ता के बजाए न केवल एक क्रूर शासन से मुक्ति दिलाने वाला तारणहार प्रतीत हो बल्कि घटनाओं अथवा दुर्घटनाओं को विजेता पक्ष में न्यायपूर्ण और विजित पक्ष की तरफ से अन्यायपूर्ण प्रहार के रूप में भी देखें। ये बाते सिद्ध करने के लिए विशद विश्लेषण की जरूरत है। सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करने पर हम पाएंगे कि क्रूरताओं को किस प्रकार न्यायपूर्ण सिद्ध करने का जतन किया गया है।

विरोधाभास यहीं से दृष्टिगत होना आरंभ हो जाता है कि कौरव पक्ष के महा योद्धाओं ने पांडवों का वध न करने की प्रतिज्ञाएँ उठा रखी हैं जैसे कि युद्ध न होकर कोई तीरंदाजी स्पर्धा का प्रदर्शन होने जा रहा हो। वयोवृद्ध भीष्म पितामह ने पांडवों का वध न करने की प्रतिज्ञा उठा रखी है, उधर आचार्य द्रोण ने पांडवों का वध न करने की शपथ ले रखी है। सूर्यपुत्र कर्ण केवल अपने अहंकार की तुष्टि के लिए युद्धरत हैं कि उन्हें केवल स्वयं को अर्जुन से बेहतर तीरंदाज योद्धा सिद्ध करना है। इसीलिए उन्होंने दो शपथ उठाई हुई है कि एक तो वे अर्जुन के अलावा किसी पांडव का वध नहीं करेंगे और दूसरा वे अपने गुरूभाई सेनापति भीष्म के सेनापतित्व के ध्वज तले युद्ध नहीं करेंगे लेकिन भीष्म के चित होते ही बलपूर्वक अर्जुन को दफन करने हेतु इस युद्ध में टूट पड़ेंगे। कौरव पक्ष में प्रतिज्ञाएं तो यूं उठाई जा रही थीं जैसे कोई शपथ स्पर्धा हो रही हो या फिर मानो युद्ध नहीं हो रहा हो, युद्ध के पहले ही दुर्योद्धन को युद्ध हरा देने का कोई षड्यंत्र हो रहा हो।

कौरवपक्ष की ओर से अभिमन्यु-वध एक क्रूरतम कार्य था लेकिन इस अर्द्धसत्य (इस पर भी विस्तृत अध्ययन की जरूरत है) के पहले तो पांडव पक्ष की तरफ से शरशैया वाली बर्बर घटना को अंजाम दे दिया गया था।

मुझे पांडव पक्ष में केवल एक ही अच्छाई नजर आती है और वो है 'उनके पक्ष में श्रीकृष्ण का शामिल होना' इस तथ्य को यदि छोड़ दिया जाए तो पांडव पक्ष की तरफ कोई कोमल पक्ष दिखाई नहीं देता। उनके करतबों पर गूढ दृष्टि डाली जाए तो वहाँ भी कोई दूध का धुला हुआ नहीं है। खामियां उनमें भी कौरव पक्ष के समानान्तर मौजूद हैं। जो खामियां महाभारतकार ने कौरवपक्ष में प्रस्तुत की हैं; वे स्पष्ट दिखाई देती हैं जबकि पांडव पक्ष की खामियों का संधान किए जाने की जरूरत है।

महाभारत की कथा को यदि थोड़ी देर के लिए कथाकार की निरपेक्षता का अनन्य उदाहरण मान भी लिया जाए तो भीष्म का कोमल पक्ष छुपाया नहीं जा सकता। कथाकार के विवरण अनुसार पांडव सदैव ही प्रताड़ित रहे। उनके साथ खानपान में भी भेदभाव किया जाता था फिर भी वे बलिष्ठ शरीर वाले योद्धा के रूप में शारीरिक सौष्ठव प्राप्त करने में सफल रहे जबकि आधी जिंदगी और बहुत सारा बचपन वे जंगलों की खाक छानते फिरे थे। जो कुछ समय उन्होंने राजमहल में व्यतीत किया, उस दौरान राजकुमार होते हुए भी उनका मनपसंद खाना भरपेट खाने का बजट नहीं दिया जाता था। ऐसे में उनके खानपान की इच्छाओं की पूर्ति भीष्म अपने घर बुलाकर दावत के रूप में पूरी किया करते थे। भीम की खीर खाने की इच्छा की तुष्टि सदैव भीष्म के घर ही पूरी हुआ करती थी। पिता व शिक्षक के दायित्व भी भीष्म ही निभा रहे थे। अर्जुन को सदैव दुलार देते थे और अर्जुन अपना अधिकतर समय उनकी गोद में बैठना पसंद करता था। अर्जुन की शिक्षा के लिए भी वे बड़े चिंतित थे इसलिए द्रोणाचार्य ही राजकुमारों के लिए एक सम्पूर्ण और काबिल शिक्षक सिद्ध होंगे, यह भीष्म ने ही पहचाना था। जब-जब पांडवों पर आपदा आई सबसे अधिक चिंतित भीष्म ही रहे। यहाँ तक कि पांडवों का हित साधने के लिए उन्होंने राज्य के

विभाजन को भी स्वीकार कर लिया और पांडवों को उनका हक दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यह अलग तथ्य हो जाता है कि वे अपने कुलक्षणों और जूए की लत की तुष्टि के प्रयास में सब कुछ गँवा बैठे। जूए में वे दुर्योधन के बजाए किसी और के साथ दाव हारते तो भी राज्य गँवाना तो उनकी नियति था क्योंकि नशेड़ी और जुआरी के पास संपत्ति रुकती नहीं है, ऐसा शास्त्र कहते हैं।

जीवन में अपने पिता से भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले शख्स का अपने प्रियजनों के विरुद्ध युद्ध के लिए खड़े हो जाने का कारण कथाकार द्वारा बताई गई वजह से भिन्न होने की संभावना को अतिशयोक्ति नहीं कहा जा सकता है। फिर भी उन्होंने युद्ध में अपने प्रिय पांडव पुत्रों का वध न करने की प्रतिज्ञा की और कौरव प्रियजनों की तरफ से दबी आवाज में लगाए गए आरोप भी सहे। फिर भी पांडवों में उनके इस त्याग और प्रेम के प्रति कोई सम्मान दिखाई नहीं दिया। यह तथ्य तो महाभारतकार ने भी स्वीकार किया है कि आधा राज्य पांडवों को दे दिया गया था जिसे वे जुए में हार गए। फिर भी धृतराष्ट्र ने वो हारा हुआ राज्य शायद शेष आधे राज्य की एवज में लौटा दिया होगा जिसे फिर वे दुबारा दुर्योधन के साथ जुआ खेलकर हार गए। युद्ध के समय वे अपना सम्पूर्ण राज्य अपनी बुरी लत पर कुर्बान कर चुके थे तो कौनसा राज्य पांडव वापस मांग रहे थे, समझ नहीं आता है। युद्ध के समय वे केवल हमला करके हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ छीनने के इरादे वाले एक हमलावर से अधिक कुछ नहीं थे। इसी कारण भीष्म जैसे उनके शुभचिंतक उनके विरुद्ध खड़े होने को विवश रहे होंगे।

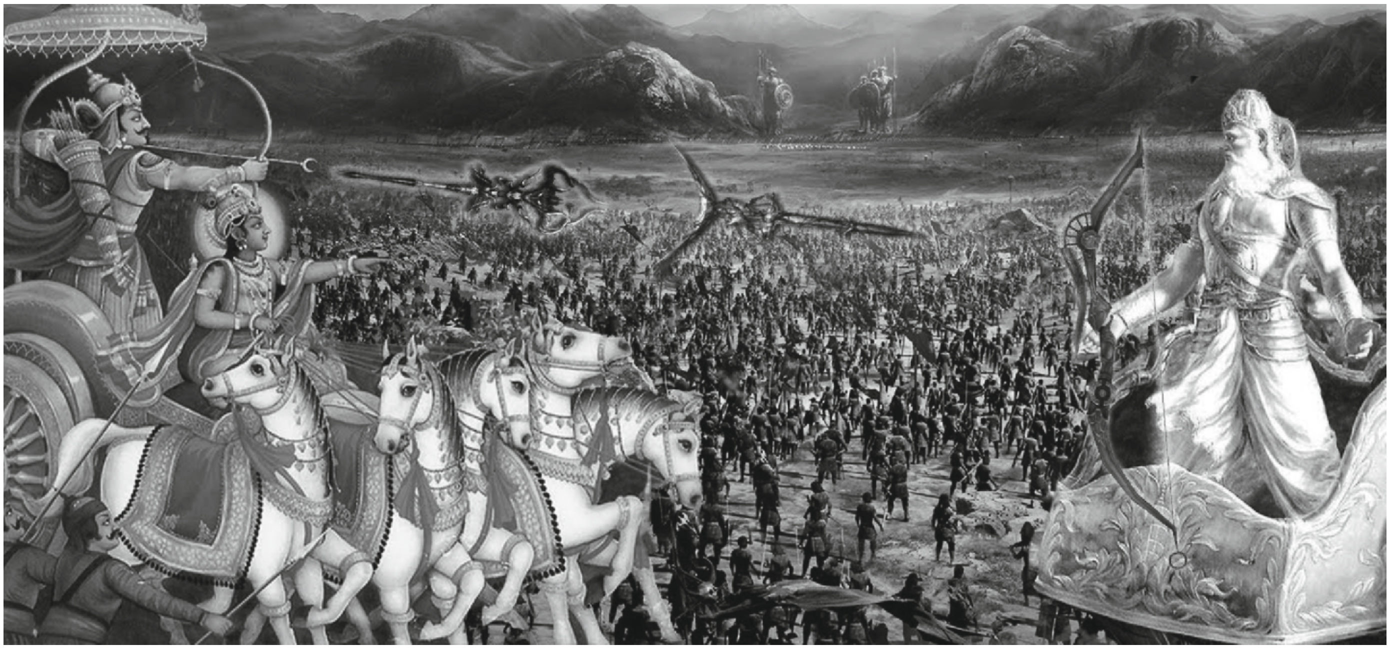

युद्ध के दौरान जिस प्रकार एक पुरुषवेश में छद्मरूप से रहने वाली अर्द्धनारी शिखंडी के पीछे खड़े रहकर भीष्म पर अर्जुन ने फ़लक वाले बाणों से जो घातक वार किए, कोई वीर उनकी प्रशंसा नहीं कर सकता। अर्जुन ने अपना पूरा रण-कौशल भीष्म को बाणों से इस प्रकार बींधने में लगा दिया कि न तो उनकी मृत्यु हो और न ही

जीवित रहे! उनका शरीर एक क्षत-विक्षत अवस्था में अर्द्ध-मृत शव की भांति पड़ा रहा, अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा में। महायुद्धकाल के उस बर्बर युग में मृत्यु का किसी भी पल इंतजार कर रहे क्षत-विक्षत शरीरों की औषध करने का कोई अवकाश नहीं होता था। ऐसे में केवल दुर्योधन उनके चारों तरफ एक खाई खुदवाने का काम कर देता है ताकि जंगली व हिंसक जानवर सीधे पितामह पर प्रहार न कर सकें। घावों व खून से रंजित शरीर पर मांसाहारी पक्षियों व कीड़ों के हमले का क्या, जो किसी भी घायल अथवा मृत जीव को अपने स्वाद साधने का पिंड मात्र समझते हों! यह चित्र कथाकार ने पाठकों की समझ के भरोसे अधूरा छोड़ दिया। इस तरफ दुर्योधन के अलावा अपने पितामह के प्रति प्रेम दर्शाने हेतु कल्याणकारी कार्य पांडवों की तरफ से नहीं किया गया। वे न केवल भीष्म को तड़पता छोड़ गए बल्कि समय-समय पर उन पर व्यंग्य बाणों की बरसात करने को कभी द्रौपदी को तो कभी किसी को भेजते रहे।

अर्जुन के बाणों का वेग और घात इतना क्रोधपूर्ण था कि जैसे वह दया और ममता शून्य कोई बर्बर पुरुष हो तथा अपने सबसे बड़े उस शत्रु पर प्रहार कर रहा हो जो उनके सम्पूर्ण दुर्भाग्य और वनवास व उनकी हत्या के षडयंत्रों का एकमात्र जिम्मेदार रहा हो। वह तब तक नहीं रुका जब तक उनके हाथ-पाँव और धड़ बाणों से बिंध कर वे निढाल होकर गिर नहीं गए। इस दृश्य का वर्णन महाभारतकार भी करता है जो बर्बरता की गवाही देने के लिए पर्याप्त है, इसके बाद का चित्र उसने नहीं किया। अर्धमृत अवस्थी में एक बाणों से बिंधा एक राजपुरुष का शरीर पड़ा है जो शव बनने के इंतजार में एक बियाबान मैदान में विवश पड़ा है।

वह युग हिंसक व्यक्तियों के साथ हिंसक जानवरों, माँसाहारी पक्षियों और जंगली कीड़ों व जीवों से भरा पड़ा है। ऐसे बाणों का प्रहार तो एक घोर शत्रु के शव पर भी नहीं किया जा सकता जो अर्जुन ने अपने जीवित संरक्षक पर किया। संरक्षक भी वो जो उनके उत्थान के लिए सदैव चिंतित रहा और उनके मंगल की कामना करता रहा। क्या भीष्म को इतना घायल कर देना पर्याप्त नहीं था कि वे युद्ध के समाप्त के कुछ वक्त बाद ठीक होकर अपनी नैसर्गिक (इच्छा) मृत्यु को प्राप्त कर सकते। कैसा था वो युग और कैसे थे वो लोग! जो एक छोटे से राज्य के लिए (जो पहले ही उन्हें मिल चुका था और जिसे वो अपनी जुए की लत पर कुर्बान कर चुके थे); अपने परिजनों की बर्बर अर्द्ध-हत्या कर जंगली आदमखोर पक्षियों और कीड़े-मकोड़ों की दावत उड़ाने का प्रबंध करने से नहीं चूके।

लोकतंत्र में मीडिया

राजेन्द्र प्रसाद

कनिष्ठ अनुवादक

''राजा बोला रात है

मंत्री बोले रात है

रानी बोली रात है

और ये सुबह–सुबह की बात है।''

यदि राजतंत्र पूरी दुनिया से धीरे–धीरे हटा नहीं होता तो ऐसे ही ''अंधेर नगरी और चौपट राजा'' की कहानी दोहराई जाती रहती और जनता को न तो सच जानने का हक मिलता और न ही कहने का। यह तो तब संभव हुआ है जब लोकतंत्र आया है। परंतु लोकतंत्र में भी रात को राहत कहने व उसकी पड़ताल करने के लिए यदि मीडिया न हो तो लोकतंत्र राजतंत्र से भी निकृष्ट साबित होगा। इसलिए लोकतंत्र में मीडिया स्थिति, आवश्यकता और महत्व पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है।

आधुनिक लोकतांत्रिक प्रणाली में लगभग सभी अधिकार जनता में निहित हैं तथा जनता इन्हीं अधिकारों की पूर्ति के लिए सरकारों का चुनाव करती हे। ये सरकारें जनहित के प्रति सजग रहें तथा जनता को अपने अधिकार मिलते रहे, इसकी पुष्टि के लिए मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसीलिए तो मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है।

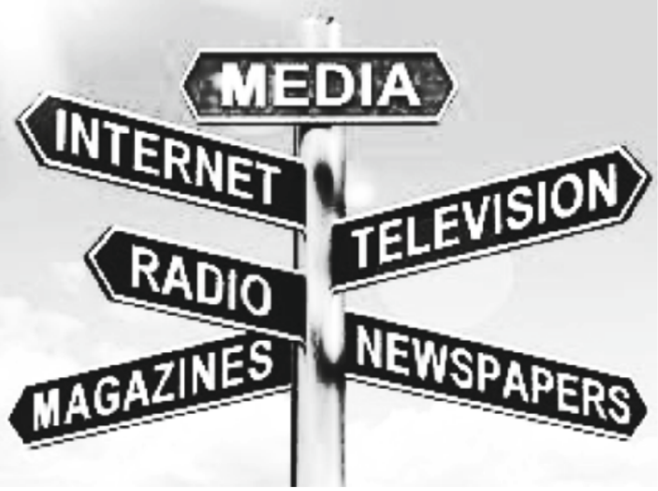

मीडिया का कार्य है, जनता के हितों की पहरेदारी, जनता की आवाज़ को एक सशक्त मंच प्रदान करना, सरकारों, नेताओं, प्रशासकों को जवाबदेह ठहराना तथा रचनात्मक भूमिका निभाते हुए सभ्य व लोकतांत्रित समाज की स्थापना करना।

मीडिया के विभिन्न रूप हो सकते हैं। यथा– प्रिंट मीडिया, टेलीविजन मीडिया, डिजिटल मीडिया तथा सोशल मीडिया। ये सभी प्रकार लोकतंत्र को सशक्त बनाते व

लोगों की आवाज़ को शासकों के कानों तक पहुंचाते रहें तभी लोकतंत्र सफल हो सकता है तथा जनता के हितों में नीति निर्माण हो सकता है।

मीडिया की भूमिका लोकतंत्र के सशक्तीकरण में तो है ही, जनता को जागरुक व सशक्त बनाने में भी इसकी महती भूमिका है। आज हम देश के या विदेश के किसी भी कोने में घटी घटना के बारे में मीडिया के माध्यम से ही जान पाते हैं।

वर्तमान में मीडिया की स्थिति का आकलन करें तो पाते हैं कि यह कुछ काम तो बहुत दक्षता के साथ कर रहा है किंतु कुछ कामों में यह विफल भी दिखाई पड़ता है। मीडिया की इस स्थिति के लिए कई कारक जिम्मेदार है- नागरिकों की अशिक्षाा व जागरुकता, सरकारों का दबाव, दोषपूर्ण बिजनेस मॉडल एवं देश में चर्चा की संस्कृति न होना आदि। आज मीडिया का अस्तित्व ाव्यावसायिक प्रतिष्ठानों व सरकारों से मिलने वाले विज्ञापनों पर टिका हुआ है जिसके चलते मीडिया जनता के मुद्दों से दूर जाता दिखाई देता है। आज के मीडिया में ब्रेकिंग न्यूज़, सनसनीखेज़ तरीके से रिपोर्टिंग एवं फेक न्यूज तथा पेड न्यूज भी बड़ी समस्याएं हैं।

लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है कि मीड़िया के क्षेत्र में व्याप्त इन गंभीर समस्याओं का समय से समाधान किया जाए एवं लोकतंत्र के इस चौथे खंभे को दरकने से बचाया जाए। इसके लिए जनता को जागरुक करना, मीडिया के बिजनेस मॉडल में बदलाव करना तथा मीडिया की रचनात्मक भूमिका को प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है।

यदि समय रहते कदम नहीं उठाए गए तो ये प्रचलित पंक्तियाँ सचमुच सत्य हो जाएंगी-

(i) **अखबार जो पहले छपकर बिकते थे**
आज बिककर छपते हैं।

(ii) **खरीदा था जो अखबार मैंने**
वह छपने से पहले ही बिक गया था।

इसलिए इस डरावनी स्थिति में जाने से पहले ही चेत जाना आवश्यक है ताकि लोकतंत्र में केवल तंत्र न रहे बल्कि लोक भी बचा रहे।

जलवायु परिवर्तन

अभय सिंह जाजड़ा

लेखाकार

''पृथ्वी के पास संसाधन इतना पर्याप्त है कि वह सभी व्यक्तियों के आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके परंतु इतना पर्याप्त नहीं कि वह किसी भी एक व्यक्ति के लालच की पूर्ति कर सके''– महात्मा गांधी

औद्योगिक क्रांति के बाद मनुष्य ने पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है, फलस्वरूप जलवायु परिवर्तन यथा– अतवृष्टि, अनावृष्टि, भूस्खलन, ओजोन परत में छेद तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं का घटित होना देखा जा रहा है।

कारण–

जलवायु परिवर्तन के अनेक कारण हैं जिसका केन्द्र प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मानव ही है। यथा– प्राकृतिक संसाधनों यथा खनिज, वन, जल, रेयर अर्थ मेटेरियल इत्यादि का अंधाधुंध दोहन। उदाहरण– चीन में रेयर अर्थ मेटेरियल का दोहन, अमेरिका का 'ड्रील बेबी ड्रोल मोडल' इत्यादि।

प्लास्टिक कचरा का नियमित प्रबंधन नहीं, ई–वेस्ट, ग्रीन हाउस गैसों का अधिकाधिक उपयोग, निजी वाहनों का प्रयोग, वनों की कटाई, रेगिस्तान का विस्तार, मृदा में उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग इत्यादि।

समुद्री परिवहन का बढ़ता घनत्व, अत्यधिक मछली व जलीय जीवों को पकड़ना इत्यादि।

प्रभाव–

जलवायु परिवर्तन एक धीमी व सतत प्रक्रिया है जिसका प्रभाव दशकों बाद अब दिखाई दे रहे हैं। यथा–

- ओजोन परत में छेद से त्वचा संबंधी बीमारियां (यथा कैंसर)।
- ग्लेशियर का पिघलना (हिमालय क्षेत्र, अंटार्कट्किा आदि में बर्फ की परत कम हो रही है।
- रेगिस्तान में बारिश (अतिवृष्टि) तथा जंगलों में सूखा व आग। जैसे– थार मरुस्थल में बाढ़ की स्थिति, इसी मानसून में औसत से 68% ज्यादा बारिश, कैलिफोर्नियां जैसे जंगलों में सूखा व आग की घटनाएं।

- पहाड़ी क्षेत्रों में बादलों का फटना व भूस्खलन। जैसे- वर्तमान में गंगोत्री, देहरादून, हिमाचल प्रदेश में बादलों के फटने व भूस्खलन घटनायें।
- वायुमंडल में विभिन्न गैसों यथा- ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, क्लोरो फ्लोरो कार्बन इत्यादि का अनुपात बिगड़ना।
- ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्री जलस्तर का बढ़ना तथा द्वीपों व टापूओं का जलमग्न होना, परिणामस्वरूप जैवविविधता, पारिस्थितिकी पर।

सुझाव–

जलवायु परिवर्तन मानव जाति के लोभ का ही नतीजा है। अतः सम्पूर्ण पृथ्वी पर सबसे प्रबुद्ध होने के नाते इसे रोकना व कम करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है इस हेतु–

- प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कम करना, अधिकाधिक वृक्षारोपण, पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग, क्लोरो फ्लोरो कार्बन गैसों का न्यूनतन उत्सर्जन, प्रकृति प्रेमी औद्योगिकीकरण का विकास, उचित कचरा प्रबंधन इत्यादि।
- इसके अलावा कुछ वैश्विक स्तर पर संस्थागत प्रयास किये जा रहे हैं यथा मांट्रेयल कन्वेशन, जेनेवा पोट्रोकॉल, सतत विकास लक्ष्य–2030, सी.एस.आर. की अवधारणा।
- भारत सरकार विभिन्न वैश्विक स्तर यथा जी–20 शिखर सम्मेलन, ब्रिक्स इत्यादि में जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए अपनी आवाज उठाई तथा 'वसुधैव–कुटुम्बकम्' की बात रखी।

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक मुद्दा है जिसमें सभी देशों को साथ मिलकर चलना होगा। भारत देश का रूख इस दिशा में विगत वर्षों में स्पष्ट व दूरदर्शी है। 2047 तक 'विकसित भारत' का सपना तभी साकार होगा जब भारत जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर वसुधैव–कुटुम्बकम् जैसी बात रखकर अन्य देशों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलेगा और अंततः विश्व गुरु बनेगा।

राजस्थान में पर्यटन

शंकर लाल

लेखाकार

प्रस्तावना–

‘धरती धोरा री’ नाम से प्रसिद्ध क्षेत्र राजस्थान पर्यटन क्षेत्र में सभी शैलियों से ओत–प्रोत होने के साथ–सार्थ प्रत्येक ऋतु में आनंद का अनुभव कराता है जैसे कि ग्रीष्मकाल में माउण्ट आबू, वर्षा ऋतु में मानसून की फुहारों में हरियालो राजसीन व शीत ऋतु में मरुस्थली कार्यक्रम हमारा राजस्थान अधिकतर मरुस्थल होने के उपरांत भी यहां पर्यटन को आकर्षित करने के लिए गढ़, बावड़ियां, महल, हवेलियां, लोकनृत्य, लोक संगीत, मंदिर, वेश–भूषा व राजस्थान की संस्कृति ने विश्व में अपनी अलग ही छाप छोड़ी है। एक प्रसिद्ध श्लोगन राजस्थान के बारे में ‘पता नहीं कब क्या दिख जाएं’ जो विश्व स्तर पर पर्यटकों को आश्चर्य में डाल देता है।

राजस्थान में प्रमुख पर्यटन क्षेत्र–

1. **स्थापत्य कला–** राजस्थान की स्थापत्य कला ने भारत ही नहीं विश्व में अपनी एक अलग ही छाप छोडी है। यहाँ के राजा–महाराजाओं के द्वारा बनाए गऐ गढ़ (जैसे– चित्तौड़गढ़, लौहागढ़, आमेर का किला व अन्य

दुर्ग), महल (कुंभा का महल, रूठीरानी का महल), हवेलियां (शेखावाटी, जैसलमेर खेत्र) के साथ-साथ परम्परागत जल संग्रहण क्षेत्र में जैसे झालरा, टौबा का निर्माण स्थापत्य कला खेत्र में अपना अलग ही स्थान रखते हैं।

2. **लोक कला–** इस कला में राजस्थान में संगीत क्षेत्र में कालबेलिया नृत्य विश्व मंच पर राजस्थान की एक अलग ही पहचान दिलाई है। इस प्रकार यहाँ की लोक कला में नृत्यों (घूमर, कालबेलिया, चरी और भी अन्य नृत्य हो क्षेत्र विशेष जैसे कच्ची घोड़ी नृत्य), लोकगीत जो एक विशेष प्रकार के वाद्ययंत्र के साथ गाए जाते हैं पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

3. **मेले व त्योहार–** राजस्थान के मेले व त्योहार लगभग क्षेत्रानुसार वर्षभर आयोजित क्किऐ जाते हैं। जिनमें मरुस्थल के साथ-साथ राजस्थान के किसी न किसी क्षेत्र में त्योहार मनाया जा रहा होता है। जैसे-आर.टी.डी.सी. द्वारा मरु महोत्सव, थार महोत्सव का आयोजन के साथ-साथ जयपुर की गणगौर व पतंग महोत्सव, पुष्कर में धार्मिक जीवन पर आधारित श्रद्धा से भरा धार्मिक मेला, बाबा रामदेव जी का मेला। इस प्रकार मेलों व त्यौहार में भी राजस्थान की एक अलग ही पहचान है।

4. जैसे-जैसे गर्मियां बढ़ती हैं वैसे-वैसे माउण्ट आबू एक पर्यटन का प्रमुख केन्द्र बन जाता है।

5. हाडौती क्षेत्र में स्थित अनेक उद्यान, बाघ संरक्षित क्षेत्र व डेजर्ट सफारी हेतु अनेक आकर्षित केन्द्र है।

6. झीलों की नगरी उदयपुर के होटल जो विश्व प्रसिद्ध हैं जहाँ बड़ी-बड़ी शादियों का आयोजन किया जाता है।

पर्यटन से राजस्थान को लाभ–

इस प्रकार राजस्थान में पर्यटकों हेतु आकर्षित क्षेत्र जो राजस्थान की एस.डी.पी. में भी वृद्धि करता है लगातार पर्यटकों की संख्या बढने से रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी होती है।

उपसंहार–

पर्यटन क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने के साथ-साथ राजस्थान में पर्यटकों को लुभाने के लिए अनेक योजनाएं भी संचालित है जिससे हमारे पर्यटन क्षेत्र का विकास हो ताकि अधिकतर खेत्र मरुस्थल होने के उपरांत भी हम इस क्षेत्र में ओर बढोतरी कर सके। हमारी विरासत व संस्कृति इसी प्रकार पर्यटकों को आकर्षित करती रहे।

जय राजस्थान, खुशहाल राजस्थान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई): मानव जीवन में क्रांति, संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

मनोज कुमार
सहायक लेखाधिकारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर विज्ञान का वह क्षेत्र है जिसका मूलभूत उद्देश्य ऐसी मशीनें और सिस्टम बनाना है जो मानव-समान बौद्धिक कार्य कर सकें। इसका मतलब है कि मशीनों द्वारा मानव के समान बुद्धि का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के कार्य सम्पादित करना, जैसे कि हमारे दैनिक जीवन में आसपास के वातावरण में घटित होने वाली क्रियाएँ जिनमें मोबाइल में वॉयस असिस्टेंट, वाहनों का ऑटोमेशन, कंप्यूटर/यंत्रों द्वारा निर्णय लेना, समस्या हल करना, तर्क करना इत्यादि शामिल हैं। इक्कीसवीं सदी की सबसे बड़ी तकनीकी क्रांति के रूप में, एआई ने मानव जीवन के लगभग हर पहलू को छूना शुरू कर दिया है।

यह एक दोधारी तलवार की तरह है: एक ओर यह अभूतपूर्व संभावनाओं का द्वार खोलती है, तो दूसरी ओर गंभीर सामाजिक और नैतिक चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बहुआयामी क्षेत्र और सकारात्मक प्रभाव

एआई ने विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति ला दी है जिससे मानव जीवन बहुत ही आसान और आरामदायक बन गया है। एआई के उपयोग से मानव कई जटिल गणनाओं को कुछ ही सेकंड में हल कर सकता है। इसके प्रमुख कार्यक्षेत्र और सकारात्मक प्रभाव इस प्रकार हैं:

1. स्वास्थ्य क्षेत्र

एआई का सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव स्वास्थ्य सेवा में देखा गया है। एआई संचालित उपकरण अब मेडिकल इमेजरी का विश्लेषण करके डॉक्टरों की तुलना में अधिक तेज़ी और सटीकता से रोगों का निदान कर सकते हैं। एआई जनित रोबोट्स दूर-दराज के रिमोट क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ (टेलीमेडिसिन, सर्जरी) प्रदान कर रहे हैं, जिससे चिकित्सा सुविधा हर व्यक्ति तक पहुँच रही है। तथा नई दवा की खोज में भी सहायक साबित हो रही हैं।

2. कृषि क्षेत्र

किसानों को कृषि उत्पादन में बढ़ावा देने वाली युक्तियाँ जैसे ड्रोन से कीटनाशक का छिड़काव करना, फसल पैटर्न को समझना, और मिट्टी के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने में एआई सहायक हुआ है। यह कृषि क्षेत्र को अधिक कुशल और टिकाऊ बना रहा है। ए.आई. किसानों को बेहतर निर्णय लेने, संसाधनों का कुशल उपयोग करने और उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है। ए.आई. - संचालित कंप्यूटर विज़न प्रणाली खरपतवारों को फसलों से अलग पहचानती है और केवल खरपतवारों पर ही कीटनाशकों का छिड़काव करती है, जिससे फसलों में रासायनिक उपयोग कम हो जाता है। ए.आई. कटाई से कई सप्ताह पहले फसल की संभावित उपज का सटीकता से अनुमान लगा सकता है, जिससे किसान कटाई और बिक्री की योजना बना सकते हैं। ए.आई.-संचालित रोबोट और ड्रोन बुवाई, निराई और कटाई जैसे श्रम-गहन कार्यों को सटीकता और दक्षता के साथ करते हैं, जिससे श्रम लागत कम होती है। ए.आई.-संचालित ड्रोन हवाई तस्वीरें लेते हैं जिनका ए.आई. विश्लेषण फसल स्वास्थ्य, पानी की कमी और पोषण की कमी को मापने के लिए किया जाता है।

3. गवर्नेंस और सरकारी शासन व्यवस्था

सरकारी कार्यों में एआई का उपयोग करने से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा है, और त्वरित गति से जनता को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली में कालाबाजारी रोकने एवं छद्म/ फर्जी लाभार्थियों को रोकने में एआई कारगर साबित हो रहा है। जैसे सरकार ए.आई. और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करके यह पहचान करती है कि कौन से किसान, पी.एम. - किसान जैसी योजनाओं के तहत वित्तीय सहायता के लिए अपात्र हैं। सरकारी कार्यभार को कम करने और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए सार्वजनिक सेवाओं को स्वचालित करने जैसे कदम सरकार द्वारा उठाए जा रहे हैं।

4. औद्योगिक और विनिर्माण क्षेत्र

उद्योगों में मशीन लर्निंग और रोबोटिक्स जैसे एआई के उपघटक कार्य कर रहे हैं। इन घटकों के द्वारा उद्योगों

में आसानी से कुछ ही सेकंड्स में कई प्रकार के उत्पादों का निर्माण किया जाता है। इससे दक्षता और उत्पादकता कई गुना बढ़ गई है, जिससे समय और संसाधनों की भारी बचत हुई है। खतरनाक एवं हानिकारक प्रकार के उद्योगों में ए.आई. जनित रोबोट्स के माध्यम से कार्य हो रहा हैं। ए.आई. – संचालित कंप्यूटर विज़न मानव की तुलना में कहीं अधिक सटीकता से उत्पादों में दोषों और विसंगतियों का निरीक्षण करते हैं। इससे उत्पाद की समग्र गुणवत्ता उच्च बनी रहती है और दोष पहचान क्षमता में 90% तक की वृद्धि हो सकती है

5. वैज्ञानिक अनुसंधान, मौसम पूर्वानुमान एवं तकनीकी क्षेत्र

एआई और मशीन लर्निंग शोधकर्ताओं को बड़े और जटिल डेटासेट को समझने में मदद करते हैं, जिससे वैज्ञानिक खोजों की गति तेज होती है। एआई विशेष रूप से डीप लर्निंग, उपग्रहों, रडार और मौसम केंद्रों से वास्तविक समय के डेटा का तुरंत विश्लेषण करके तूफान, चक्रवात, और अत्यधिक वर्षा जैसी घटनाओं का अधिक सटीक और समय पर पूर्वानुमान प्रदान करते हैं। जैसे कि कम अवधि के (1 से 3 दिन) वर्षा के पूर्वानुमान में सुधार।

6. वित्तीय क्षेत्र एवं ग्राहक सेवा ऑटोमेशन

एआई एल्गोरिदम ग्राहक के खर्च पैटर्न को सीखकर वास्तविक समय / रियल टाइम में असामान्य या संदिग्ध लेनदेन की पहचान करते हैं, जैसे कि क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी या वित्तीय अपराध। एआई ग्राहकों को बेहतर सेवाएँ देने और दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करने में मदद करता है। 24/7 एआई संचालित चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट ग्राहकों के प्रश्नों का तुरंत जवाब देते हैं।

7. रक्षा क्षेत्र

ऑटोमेटिक ड्रोन और वाहन : एआई संचालित मानव रहित हवाई वाहन (जैसे ड्रोन), जमीनी वाहन और पनडुब्बियां सीमा सुरक्षा, निगरानी और आपूर्ति जैसे खतरनाक मिशनों में मानव सैनिकों की जगह ले रहे हैं। इसके साथ ही खुफिया जानकारी, निगरानी में इसका उपयोग हो रहा हैं। जैसे भारतीय सेना ने हाल ही में 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान खुफिया विश्लेषण, खतरा मूल्यांकन और मौसम पूर्वानुमान के लिए एआई टूल का बड़े पैमाने पर उपयोग किया।

8. मनोरंजन एवं दूरसंचार क्षेत्र

ओटीटी प्लेटफॉर्म एआई एल्गोरिदम का उपयोग करके हमारे देखने के इतिहास, खोज पैटर्न और व्यवहार

का विश्लेषण करते हैं। यह विश्लेषण उन्हें यह भविष्यवाणी करने में मदद करता है कि हम आगे कौन-सी फिल्में या शो देखेंगे, जिससे ग्राहकों की रूचि बढ़ती है। गेम डिजाइन में एआई का उपयोग करके नए स्तर और वातावरण को स्वचालित रूप से उत्पन्न किया जाता है। दूरसंचार कंपनियाँ नेटवर्क को अनुकूलित करने के लिए एआई का उपयोग कर रही हैं।

9. शिक्षा क्षेत्र

शिक्षा क्षेत्र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण एक बड़े बदलाव के दौर से गुज़र रहा है। एआई छात्रों के सीखने के अनुभव को व्यक्तिगत बनाने, शिक्षकों के प्रशासनिक काम का बोझ कम करने और शिक्षण संस्थानों के संचालन को अधिक कुशल बनाने में मदद कर रहा है। एआई ट्यूटर और चैटबॉट्स 24/7 उपलब्ध रहते हैं, ये उपकरण छात्रों के सवालों का तुरंत जवाब देते हैं, जटिल अवधारणाओं को सरल उदाहरणों के साथ समझाते हैं, और उन्हें समस्याओं को हल करने में मार्गदर्शन करते हैं। यह उन छात्रों के लिए विशेष रूप से सहायक है जिनके पास कोचिंग तक पहुँच नहीं है।

10. साइबर सुरक्षा एवं अपराधों की रोकथाम

एआई किसी संगठन के आई. टी. वातावरण में कमजोरियों को लगातार स्कैन करता है। यह कमजोरियों को उनकी गंभीरता और हमला होने की संभावित जोखिम के आधार पर प्राथमिकता देता है, ताकि सुरक्षा टीम सबसे पहले सबसे महत्वपूर्ण खतरों को ठीक कर सके। पुलिस द्वारा अपराधियों को आसानी से पकड़ने में एआई आधारित सीसीटीवी कैमरों का उपयोग, ट्रैफिक को नियंत्रण करने और चालान करने में भी इसका प्रयोग लिया जा रहा है। ए.आई. भीड़ की असामान्य गतिविधियों, लावारिस वस्तुओं, या पूर्व-निर्धारित जोखिम वाले व्यवहारों को पहचान सकता है और तुरंत नियंत्रण कक्ष को अलर्ट भेज सकता है। चेहरा पहचान प्रणाली सीसीटीवी फुटेज से संदिग्धों या लापता व्यक्तियों की पहचान करने और उनका पुलिस डेटाबेस से मिलान करने में मदद करती हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियाँ

एआई जहाँ सुविधाएँ प्रदान करता है, वहीं इसके कुछ गंभीर नकारात्मक प्रभाव भी हैं जिनका समाधान आवश्यक है:

1. रोजगार पर खतरा और कौशल उन्नयन

एआई-आधारित जॉब आने से कई कंपनियों/औद्योगिक एवं विनिर्माण इकाईयों ने नौकरियों में छंटनी करना शुरू कर दिया है तथा मानव आधारित कार्य सीमित कर दिया है। डेटा एंट्री, ग्राहक सेवा और विनिर्माण जैसे

दोहराव वाले कार्य एआई-संचालित स्वचालन के कारण खतरे में हैं, जिससे बड़े पैमाने पर कर्मचारियों के लिए कौशल उन्नयन की गंभीर आवश्यकता उत्पन्न हुई है।

2. निजता का उल्लंघन और डेटा सुरक्षा

एआई के कारण मानव की गोपनीयता का उल्लंघन हो जाता है क्योंकि बड़े पैमाने पर डेटा संग्रहण होता है। डेटा सुरक्षा अभी भी चिंता का विषय बना हुआ है, जिसके लिए मजबूत कानूनी ढाँचे की आवश्यकता है।

3. एआई में निहित पूर्वाग्रह

एआई सिस्टम को प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले डेटा में निहित मानव पूर्वाग्रह का खतरा हमेशा बना रहता है। यदि एआई किसी विशेष लिंग, जाति या वर्ग के प्रति पक्षपाती निर्णय देना शुरू कर दे, तो यह सामाजिक असमानताओं को और गहरा कर सकता है।

4. एआई जनित हमले

साइबर अपराधी एआई का उपयोग करके अधिक तेज़, व्यापक और जटिल साइबर हमले (जैसे स्वचालित मैलवेयर और अत्यधिक विश्वसनीय फ़िशिंग) कर सकते हैं।

5. डीपफेक का खतरा:

जेनरेटिव एआई यथार्थवादी लेकिन नकली ऑडियो और वीडियो (डीपफेक) बना सकता है। इसका उपयोग दुष्प्रचार, ब्लैकमेल और राजनीतिक अस्थिरता फैलाने के लिए किया जा सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के आधार पर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग समय के अनुरूप आवश्यक है, परन्तु इसमें मानव हित को सर्वोपरि रखते हुए, डेटा गोपनीयता का ध्यान रखते हुए उपयोग में लिया जाना चाहिए। एआई को मानव कल्याण के लिए निर्देशित करने हेतु, सरकारों, वैज्ञानिकों और नीति-निर्माताओं को मिलकर काम करना होगा। यह सुनिश्चित करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि एआई का विकास नैतिक सिद्धांतों, पारदर्शिता और निष्पक्षता पर आधारित हो, ताकि यह मानवता के लिए वरदान साबित हो सके, न कि मानव को ही नियंत्रित करने वाली तकनीक।

दर्शनशास्त्र: ज्ञान, तर्क और जीवन का आधार

अक्षय कुलहरी
कनिष्ठ अनुवादक

दर्शनशास्त्र का शाब्दिक अर्थ है ''**सत्य के प्रति प्रेम**'' या ''**प्रज्ञा के प्रति अनुराग**''। यह जीवन के उन मूलभूत प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास है जिन्हें विज्ञान अक्सर छोड़ देता है: हम यहाँ क्यों हैं? सही और गलत क्या है? वास्तविकता क्या है?

जिज्ञासा और प्रज्ञा का मिलन

मानव सभ्यता का इतिहास वास्तव में उसकी जिज्ञासा का इतिहास है। जब मनुष्य ने पहली बार अपनी बुनियादी भौतिक आवश्यकताओं से ऊपर उठकर अस्तित्व के मूल कारणों पर विचार किया, तब 'दर्शन' का जन्म हुआ। दर्शनशास्त्र, जिसे अंग्रेजी में 'फिलॉसफी' कहा जाता है, का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान के प्रति प्रेम। किंतु भारतीय संदर्भ में इसे 'दर्शन' कहा गया, जिसका अर्थ है 'देखना'- केवल आँखों से नहीं, बल्कि विवेक और प्रज्ञा की अंतर्दृष्टि से सत्य का साक्षात्कार करना । यह एक ऐसा अनुशासन है जो उन अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है जहाँ विज्ञान की सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं । विज्ञान हमें बताता है कि ब्रह्मांड 'कैसे' काम करता है, किंतु दर्शन हमें यह समझने की दिशा देता है कि इस ब्रह्मांड के होने का 'उद्देश्य' क्या है।

दर्शनशास्त्र की ऐतिहासिक विकास यात्रा

दर्शन का इतिहास मानवीय मेधा के विकास की कहानी है। प्राचीन यूनान में, जहाँ सुकरात ने बाज़ारों और गलियों में खड़े होकर लोगों से सवाल पूछने की पद्धति विकसित की, वहीं से पाश्चात्य दर्शन की नींव पड़ी। सुकरात का मानना था कि 'बिना जांचा हुआ जीवन जीने योग्य नहीं है।' उनके शिष्य प्लेटो ने आदर्शवाद की स्थापना की और उनके बाद अरस्तू ने तर्कशास्त्र को एक वैज्ञानिक ढांचा प्रदान किया। मध्यकाल के आते-आते दर्शन कुछ समय के लिए धर्म का अनुगामी बना, किंतु पुनर्जागरण के दौर में डेकार्ट, कांट और हीगल जैसे विचारकों ने इसे पुनः मानव बुद्धि और तर्क के केंद्र में स्थापित किया। डेकार्ट के 'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ' वाले सूत्र ने व्यक्ति को ब्रह्मांड के केंद्र में लाकर खड़ा कर दिया, जिससे आधुनिक वैज्ञानिक चेतना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

अद्वैत वेदांत और आधुनिक विज्ञान: एक वैचारिक महामिलन

आज की 21वीं सदी में जब हम विज्ञान और दर्शन को आमने-सामने खड़ा करते हैं, तो पाते हैं कि वे

विरोधी नहीं बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। विशेष रूप से आधुनिक भौतिकी और अद्वैत वेदांत के बीच का संवाद अत्यंत विस्मयकारी है। जब वैज्ञानिक परमाणुओं के भीतर की दुनिया का अध्ययन करते हैं, तो वे पाते हैं कि वहाँ कुछ भी ठोस नहीं है, बल्कि ऊर्जा का एक सतत स्पंदन है। यह अद्वैत के 'माया' सिद्धांत के समानांतर खड़ा है, जो कहता है कि जगत आभासी है और सत्य केवल अंतर्निहित ऊर्जा या चेतना है।

आइंस्टीन का प्रसिद्ध समीकरण $E=mc^2$ यह सिद्ध करता है कि पदार्थ और ऊर्जा एक ही तत्व के दो रूप हैं, जो अद्वैत की उस अवधारणा को पुष्ट करता है कि 'एक ही तत्व' अनेक रूपों में अभिव्यक्त हो रहा है। इसके अतिरिक्त, हाइजेनबर्ग का 'अनिश्चितता का सिद्धांत' और श्रोडिंगर का 'वेव फंक्शन' यह दर्शाते हैं कि प्रेक्षक की उपस्थिति ही परिणाम को प्रभावित करती है। यह इस महान दार्शनिक सत्य की ओर संकेत करता है कि चेतना और पदार्थ अलग-अलग नहीं हैं। आज का 'सिमुलेशन सिद्धांत' या 'होलोग्राफिक यूनिवर्स' का विचार वास्तव में आदि शंकराचार्य के मायावाद का ही आधुनिक वैज्ञानिक संस्करण प्रतीत होता है।

'अद्वैत वेदांत और आधुनिक विज्ञान' के बीच का अंतर्संबंध 21वीं सदी के सबसे रोमांचक वैचारिक मिलन बिंदुओं में से एक है। जहाँ प्राचीन ऋषि-मुनियों ने अंतर्मुखी होकर ध्यान की गहराई में सत्य को खोजा, वहीं आधुनिक भौतिक विज्ञान ने सूक्ष्म कणों और ब्रह्मांडीय ऊर्जा के गणितीय विश्लेषण के माध्यम से लगभग उन्हीं निष्कर्षों की ओर कदम बढ़ाए हैं। इस दार्शनिक प्रवाह को समझने के लिए हमें पदार्थ, चेतना और वास्तविकता के उन स्तरों को देखना होगा जहाँ विज्ञान और अध्यात्म की सीमाएं धुंधली पड़ने लगती हैं।

इस कड़ी में दूसरा बड़ा बिंदु 'चेतना' (Consciousness) का है। विज्ञान लंबे समय तक मानता रहा कि मस्तिष्क की जैविक प्रक्रियाओं से चेतना पैदा होती है, जिसे 'पदार्थवाद' कहा गया। लेकिन आधुनिक समय में 'क्वांटम चेतना' के सिद्धांत यह सुझाव दे रहे हैं कि चेतना पदार्थ का परिणाम नहीं, बल्कि ब्रह्मांड का आधारभूत तत्व हो सकती है। अद्वैत वेदांत हज़ारों वर्षों से यही कहता आ रहा है कि ब्रह्म 'सच्चिदानंद' (सत्य, चित्त, आनंद) स्वरूप है और पूरी सृष्टि इसी चेतना का विस्तार है। अर्विन श्रोडिंगर और निकोला टेस्ला जैसे महान वैज्ञानिक भी उपनिषदों के इस विचार से गहराई से प्रभावित थे कि 'चेतना एक है और उसका विभाजन केवल एक भ्रम है।'

अंततः, अद्वैत और आधुनिक विज्ञान का यह मेल हमें एक ऐसी वैश्विक दृष्टि देता है जहाँ तर्क और श्रद्धा एक साथ चलते हैं। यह बोध कि पूरा ब्रह्मांड एक ही अंतर्निहित धागे से जुड़ा हुआ है, न केवल वैज्ञानिक जिज्ञासा को तृप्त करता है, बल्कि हमारे भीतर करुणा और एकता का भाव भी भरता है। जब विज्ञान कहता है कि हम 'सितारों की धूल (Stardust) से बने हैं और वेदांत कहता है कि हम 'ब्रह्म' के अंश हैं, तो दोनों का गंतव्य एक ही होता है- विभाजन से एकता की ओर यात्रा।

भारतीय दर्शन की अविरल और समावेशी धारा

भारतीय दर्शन की परंपरा विश्व की प्राचीनतम विचार-धाराओं में से एक है, जो वेदों की ऋचाओं से प्रस्फुटित होकर उपनिषदों के गंभीर चिंतन तक पहुँचती है। यहाँ सत्य को किसी एक खांचे में नहीं बांधा गया, बल्कि उसे एक बहती हुई सरिता के समान माना गया जिसमें अनेक संगम मिलते हैं। भारतीय मनीषा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी 'आस्तिकता' और 'नास्तिकता' के बीच का संतुलन है। जहाँ सांख्य दर्शन प्रकृति और पुरुष के द्वैत के माध्यम से सृष्टि की रचना समझाता है, वहीं योग दर्शन उसी सिद्धांत को क्रियात्मक रूप देकर चित्त की वृत्तियों के निरोध का मार्ग बताता है। न्याय और वैशेषिक दर्शन ने जहाँ तर्क और परमाणुओं के सूक्ष्म विश्लेषण से भौतिक जगत को समझने की कोशिश की, वहीं मीमांसा ने कर्तव्य और धर्म के पालन को ही जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य माना।

इस धारा का चरमोत्कर्ष 'वेदांत' में दिखाई देता है, विशेषकर आदि शंकराचार्य के 'अद्वैत' सिद्धांत में। अद्वैत का अर्थ है 'दो नहीं', अर्थात आत्मा और परमात्मा एक ही चैतन्य के दो नाम हैं। यह दर्शन हमें सिखाता है कि अज्ञानता के कारण ही हमें भेद दिखाई देते हैं, और जैसे ही ज्ञान का उदय होता है, यह पूरा जगत एक ही ब्रह्म का विस्तार प्रतीत होने लगता है। भारतीय दर्शन की विशालता का प्रमाण यह है कि इसने चार्वाक जैसे भौतिकवादियों को भी स्थान दिया जो केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण मानते थे, और बुद्ध तथा महावीर जैसे महापुरुषों को भी, जिन्होंने अहिंसा और मध्यम मार्ग के माध्यम से संसार के दुखों का तार्किक समाधान प्रस्तुत किया।

किंतु भारतीय दर्शन की उदारता यहीं समाप्त नहीं होती; इसमें नास्तिक धाराओं के लिए भी उतना ही सम्मानजनक स्थान है। चार्वाक का भौतिकवाद जहाँ प्रत्यक्ष अनुभव को ही सत्य मानता है और इंद्रिय सुख को जीवन का आधार बताता है, वहीं जैन और बौद्ध दर्शन ने मध्य मार्ग और अहिंसा को विश्व दर्शन के पटल पर स्थापित किया। जैन दर्शन का 'अनेकांतवाद' हमें यह सिखाता है कि सत्य सापेक्ष है और एक ही वस्तु को कई दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है, जो आज के वैश्विक संघर्षों के समाधान के लिए एक अत्यंत प्रासंगिक सिद्धांत है। महात्मा बुद्ध का 'प्रतीत्यसमुत्पाद' और 'अष्टांगिक मार्ग' दुखों के कारण और उनके निवारण की ऐसी तार्किक श्रृंखला प्रस्तुत करता है जो किसी भी आधुनिक मनोविज्ञान से कम नहीं है।

इन सभी अलग-अलग धाराओं को जो तत्व एक सूत्र में पिरोता है, वह है कर्म और पुनर्जन्म का सिद्धांत। भारतीय दर्शन यह मानता है कि मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है और उसके कर्म ही उसके वर्तमान और भविष्य की दिशा तय करते हैं। जीवन का अंतिम लक्ष्य दुखों की आत्यंतिक निवृत्ति या 'मोक्ष' है, जो केवल सूचनाओं के संग्रह से नहीं, बल्कि चरित्र के परिशोधन और विवेक के उदय से प्राप्त होता है। इस प्रकार, भारतीय दर्शन एक ऐसी बहती हुई धारा है जो मनुष्य को भौतिकता के धरातल से उठाकर चेतना के उच्चतम शिखर तक ले जाने का सामर्थ्य रखती है।

व्यावहारिक उपयोग: जीवन के संघर्षों में दर्शन की भूमिका

दर्शन केवल पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने के लिए नहीं है, बल्कि यह दैनिक जीवन का सबसे व्यावहारिक उपकरण है। आज के इस तनावपूर्ण और अनिश्चितता से भरे युग में 'स्टोइज़िज़्म' जैसे दर्शन लोगों को मानसिक स्थिरता प्रदान कर रहे हैं। यह हमें सिखाता है कि हम बाहरी घटनाओं को नियंत्रित नहीं कर सकते, किंतु उन पर अपनी प्रतिक्रिया को अवश्य नियंत्रित कर सकते हैं। नीतिशास्त्र (Ethics) के रूप में दर्शन हमें यह दिशा देता है कि सफलता से अधिक महत्वपूर्ण सार्थकता है। किसी भी लोकतांत्रिक देश का संविधान, न्याय की अवधारणा और मानवाधिकारों का सम्मान। ये सब अंततः दार्शनिक विचारों की ही परिणति हैं। जब हम जीवन में कोई बड़ा निर्णय लेते हैं, तो अनजाने में ही हम किसी न किसी दार्शनिक मूल्य का सहारा ले रहे होते हैं।

भविष्य की संभावनाएँ: तकनीक और नैतिकता का द्वंद्व

जैसे-जैसे मानवता कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), जेनेटिक इंजीनियरिंग और बायो- तकनीक के युग में प्रवेश कर रही है, दर्शन की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है। यदि कोई मशीन इंसानों की तरह निर्णय लेने लगे, तो उसकी नैतिकता का आधार क्या होगा? यदि हम आनुवंशिक रूप से 'डिजाइनर बेबी' बनाने लगें, तो 'प्राकृतिक' होने के मायने क्या रह जाएंगे? इन जटिल सवालों के जवाब केवल तकनीक के पास नहीं हैं। यहाँ दर्शन को हस्तक्षेप करना होगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रगति मानवीय मूल्यों की कीमत पर न हो। पर्यावरणीय दर्शन आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, जो हमें याद दिलाता है कि पृथ्वी हमारे उपभोग के लिए कोई वस्तु नहीं, बल्कि एक जीवंत इकाई है जिसके प्रति हमारे नैतिक उत्तरदायित्व हैं।

निष्कर्ष: प्रकाश की निरंतर खोज

अंततः, दर्शनशास्त्र हमें उत्तर देने से अधिक प्रश्न पूछने की क्षमता प्रदान करता है। यह हमें सिखाता है कि ज्ञान का अर्थ केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि स्वयं को और इस संपूर्ण ब्रह्मांड को एक अखंड इकाई के रूप में देखना है। चाहे वह विज्ञान की प्रयोगशाला हो या जीवन का कठिन दौर, दर्शन वह ध्रुव तारा है जो हमें दिशा दिखाता है। जब विज्ञान कहता है कि हम 'सितारों की धूल' से बने हैं और वेदांत कहता है कि हम 'ब्रह्म' के अंश हैं, तो वास्तव में दोनों ही हमें उस विराट सत्य का आभास कराते हैं जहाँ भेद समाप्त हो जाते हैं और केवल शुद्ध अस्तित्व शेष रह जाता है। दर्शन की यह यात्रा अनंत है, क्योंकि सत्य की खोज कभी समाप्त नहीं होती।

मिष्ठान प्रेमी देश मेरा (अतुल्य भारत)

मुकुल दीक्षित

वरिष्ठ खण्डीय लेखाधिकारी

‘माधुर्यं मधुरं सर्वं न किंचित जिव्हा माधुर्यं विद्यमान तदेन परमं सुखं’

संस्कृत का यह श्लोक मधुरम मिठाइयों का अपना महत्व दर्शाता है क्योंकि मीठा मधुर होता है। भारत एक अतुल्य एवं अविस्मरणीय देश है जिसमे धर्म, संस्कृती अध्यात्म योग ज्ञान एव पर्यटन और स्वाद का अद्भुत संगम मिलता है। भारत देश की विशेष बात, यहाँ की वैदिक भक्ती पद्धती है जिसमे विभिन्न देवी देवताओं की पूजा उपासना, हवन आदि किए जाते है जिसमे देवी देवता को श्रद्धा के साथ प्रसाद समर्पित किया जाता है जैसे गजानंद जी को लड्डू, माँ सरस्वती को रेवड़ी – गजक और केसर बर्फी, भोले नाथ को सफ़ेद बर्फी, कान्हा जी के पेड़े मोहन थाल और सागर, नाथद्वारा जी को सागर, मीठी मठरी, बजरंगबली को बूंदी अथवा बूंदी के लड्डू, खाटू श्याम बाबा को लाल पेड़े और चूरमा, विष्णु भगवान् को केसर बर्फी तीज माता को घेवर और यह सूची अगर बनाना प्रारम्भ किया जाये तो यह लेख अपने आप में मंदिरों में प्रसाद को समर्पित करने तक ही सीमित रह जायेगा। भारत वर्ष के प्रत्येक मंदिर में छप्पनभोग की झांकी साल में कई बार प्रमुख तिथियों में हिन्दू पंचान्गुसार लगती है वहा भगवान के समक्ष उस दृश्य को देखते है तब जिस मिष्ठान के निर्माता (हलवाई) के द्वारा उस मिठाई का खूबसूरती से सृजन किया है उसके प्रति मन से आभार निकल ही जाता है।

भगवान को मिष्ठान समर्पित करने का एक आधारभूत कारण है मीठा स्वाद एक विस्तार है जिसमे आनंद है सुख संवेदी अनुभव है और स्वाद का मूल भूत गुण है। यह भोजन और अनुभव दोनों में तृप्ती, सद्गुण और वांछनीय गुण का प्रतीक हो सकता है।

भारत वर्ष में विभिन्न प्रकार की मिठाईयाँ बनती है उनका अगर वर्गीकरण किया जाये तो उसको निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

दूध और मावे, दही और छने मिठाईयाँ : दूध की मिठाइयों में दूध या तो प्रत्यक्ष नज़र आता है अथवा उसको खोया, छैना क्रीम मावा में परिवर्तित कर मिठाई बनाई जाती है। दूध प्रत्यक्ष नजर आने वाली मिठाईयो मे खीर, रसमलाई, सवैया, मेवे खीर और मेवा दूध, रबड़ी आदि।

मावे कि मिठाइयों में सफ़ेद बर्फी एक एसी मिठाई है जो लड्डू के साथ छोटे से छोटे गाँव तहसील में अवश्य मिलती है एवं इसके स्वाद से सभी भारत के नागरिक भली भाँती परीचित है। मावे की मिठाइयों में अलवर का कलाकंद, मथुरा के पेड़े, रबडी मेवाबाटी, कच्ची मावा बर्फी, सादा सफ़ेद बर्फी, कश्मीरी बर्फी, गिलोय पाइनएप्पल खोपरा, पिंक पेठा, मावा नारियल बर्फी, संगम बर्फी, मावा अखरोट बर्फी, केसर बर्फी, बर्फी, लौकी बर्फी मलाई बर्फी, मावा पेड।,डायमंड केक, गुलाब सिटी, सूरजमुखी, हनी ड्यू, थाल बर्फी, मिश्री मावा, गुलाब शकरी, आम बर्फी, पाता बर्फी, आदि मिष्ठान निर्माता इन्हें विभिन्न रंगों से सजाकर अपनी अपनी मिष्ठान विक्रय केंद्र में प्रदर्शन करते है और मिष्ठान प्रेमियों को लुभाते है।

लस्सी दही को मथकर बनाते है एवं उसमे चीनी और गुलाबजल मिलाकर उसपर क्रीम टापिंग के साथ दी जाती है। वैसे तो मिष्ठी दोही बंगाल की प्रिय मिठाई है परन्तु यह अब देश के मुख्य शहरो में उप्लब्ध है।

लड्डू भगवान् गणेश का प्रिय मोदक : लड्डू या लाडू विभिन्न प्रकार के होते है और अलग अलग राज्यों में विभिन्न विभिन्न प्रकार के लड्डू मिलते है बूंदी के लड्डू तो छोटी से छोटी गाँव एवं ढाडी में भी मिल जाते है और ग्रामवासीयो की प्रिय मिठाई है। वैसे तो लड्डू की आकार गोल होता है परंतु आजकल उनको भी विभिन्न आकार दिया जाने लगा है जैसे लट्टू कि आकृती, सेब की आकृती या त्रिकोणीय। लड्डू की लोकप्रियता इस बात से है कि कोई भी पार्टी जो चुनाव जीतती है अथवा भारत विश्वकप जीते सबसे पहले लड्डू ही बांटे जाते है। लड्डू भी विभिन्न प्रकार के होते है बेसन के लड्डू, मूंग दाल के लड्डू, चूरमे के लड्डू मावे के लड्डू, तिल के लड्डू, गुड के लड्डू, दूध के लड्डू, मोती चूर के लड्डू मेवे के लड्डू, गोंद के लड्डू, अंजीर के लड्डू, गुलाब के लड्डू, नारियल के लड्डू, मीनाक्षी मंदिर के लड्डू, तिरुपति मंदिर के लड्डू, लच्छा लड्डू आदि। लड्डुओं के विभिन्न प्रकार एवं अद्भुत स्वाद को देखते हुए भगवान् गणेश की आरती में सभी भक्त गाते है ''लडुअन का भोग लगे संत करे सेवा जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।''

बंगाली मिठाइयां : पश्चिम बंगाल की पहचान उसकी मिठाइयों से होती है जिनका इतिहास काफी पुराना है रसोगुल्ला वहां की प्रसिद्ध छैने की मिठाई है जो सफ़ेद रंग की गोल मुलायम मिठाई होती है जिनको कि चीनी की चाशनी में डुबो के रखा जाता है और मिट्टी के कुल्लड़ों में पैक करके देते है एवं यह मिठाई विश्व भर में अपने स्वाद के लिये प्रसिद्ध है। अन्य बंगाली मिठाइयों के उदहारण है- बीकानेरी रसगुल्ला, चमचम्, खीरमोहन (कफीर कोदम),

रसमलाई, इंद्राणी, रस माधुरी मलाई रोल, शिरोमणि, खुर्मानी संदेश, मलाई चाप, केसरीया संदेश, रसमोहन मुर्गी छैने, छैने टोस्ट, पिस्तापश्च पान गिलोय, फ्रूट कप, किशोर-रामानी, अनारकली, अनुरोध, अनारकली, पाकीजा, बादाम भोग, पिस्ता बादाम भोग, पाइनएप्पल सैंडविच, और पाइनएप्पल कृन्च्व, बंगाली मिठाइयों में छैने के ऊपर क्रीम की टापिंग होती है।

चीनी की चाशनी में डुबोकर दी जाने वाली मिठाइयां गुलाबजामुन है जो गोल होता है और मैदा आटा और सूजी के प्रयोग से बनता है उक्त गोल तली हुई गेंद को लाल होने तक तलते है और चाशनी में डुबोकर रखा जाता है इस कारण से वह नरम खाने योग्य नरम गेंद रूपी मिठाई बन जाती है विभिन्न मिष्ठान निर्माता तेल में तारने से पूर्व उसके अन्दर मावा, मेवा, बताशे, केसर आदि भरते है और उसको स्वादिष्ट बनाते है। इसी श्रेणी की एक और मिठाई माल पुआ होती है जिसको आटे को दूध के साथ गूंथकर छोटी छोटी पूरी बनाकर तलते है एवं चाशनी में डुबोकर प्रस्तुत की जाती है। इसी प्रकार की एक मिठाई पटना, बनारस में मिलती है जिसको चन्द्रकला कहते हैं वह चंद्रमा के आकार कि मिठाई होती है एवं गुजिया की तरह मावा आदि भरकर चाशनी में डुबोकर प्रस्तुत की जाती है। मालपुए भी एक इसी प्रकार की मिठाई है जिसको आटा मैदा और सूजी और दूध के मिश्रण को गूंथकर से छोटी गोल चपटी प्लेट के आकार को घी में सेककर बनाते है और जिसको चाशनी में डुबोकर स्वाद लेने के लिये प्रस्तुत किये जाते है। शक्कर पाडे एक ऐसी मिठाई है जो बाजार में मिले या ना मिले घर में महिलायें मर्जी अनुसार बना लेती है यह आटे और मैदा से बनती है अगर इसको नमक के साथ बनाया जाए तो यह सांखे और चाशनी चढ़ा दी जाए तो यह शक्कर पाडा बन जाती है।

राजस्थान की दो प्रसिद्ध मिठाइयां हैं घेवर और चूरमा। चूरमा आटे का बनता है और गेंद नुमा गोल होता है जिसमें मेवा मावा आदि मिलाकर बनाते है जब इसमें गुलाब का शुद्ध अर्क व पत्तियाँ डालते है तो यह गुलाब चूरमा बन जाता है एवं जब यह बेसन से बनता है तो बेसन का चूरमा कहलाता है। सर्दियों में बाजरे का चूरमा भी बनाया जाता है।

घी अथवा तेल में तलकर चाशनी में डुबोकर प्रस्तुत की जाने वाली अन्य मिठाई है जलेबी जिसको खमीर उठाकर आटे, उड़द दाल मैदा के मिश्रण से बनाते है एवं घी अथवा में कढाई में छोड़ते वक्त इसको हलवाई निर्माता द्वारा घुमावदार विभिन्न तरीकों से अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए मनोकूल आकृती दी जाती है।

फलो की मिठाईयां : आगरे का पेठा एक ऐसी विश्व प्रसिद्ध मिठाई है जो पेठे नाम के फल से बनाया जाता है एवं उसको चाशनी के संयोग के साथ बनाते है। पेठे भी कई प्रकार के होते हैं आगरे का पेठा, अंगूरी पेठा, मावे का पेठा, मेवा का पेठा, पेठा सैंडविच। फलो से निर्मित अन्य मिठाइयां हैं लौकी की बर्फी, लौकी का लच्छा, नारियल की बर्फी, अंजीर की बर्फी, काजू कतली, अंजीर काजू किंग,काजू कलश अखरोट की बर्फी, बादाम कतली खुमानी की मिठाई आदि।

तिल की मिठाई : सर्दी के मौसम में तिल की बनी हुई गजक, रेवड़ी, तिलपट्टी तिलबुग्गा एवं तिल के लड्डू मावे वाले और गुड वाले जिनमें प्रचुर मात्रा में गुड डालने से तिल और गुड का प्रयोग सर्दी के प्रभाव को कम करता इसके साथ ही इनमे मेवे, और मावा का प्रयोग इन्हें बलवर्धक बनाता है।

स्वर्ण रजत की मिठाइयों का निर्माण भी शामिल हो चुका है एवं इनमें शुद्ध सहने और चांदी का अर्क का प्रयोग किया जाता है।

भारत के राज्यों वार और शहर वार भी कुछ प्रसिद्ध मिष्ठान है जैसे लखनऊ उत्तरप्रदेश की मलाई पान गिलोरी, शाही टुकडा, और ज़र्दा कश्मीर की फिरनी, शुफ्ता मोदुर पुलाओ, केरल का पलड़ा पायसम और वेट्टू केक, आधा प्रधमान, नेयाप्पम, चेन्नई का मसूर पाक, खाकेसरी, कोजू कत्तई बूरेल्स, उक्करई, आंध्र प्रदेश की पूर्ण आलू। इसी प्रकार गुजरात की बासुंदी, दूध पाक, हिमाचल प्रदेश का बावरू, सीकिम की सेल रोटी, बिहार का ठेकुआ, नागालैंड का कोत पिधा, आंध्र प्रदेश का कुबानी का मीठा, ओडिसा का छैना पेड़ा, मिजोरम की चगवान लेह कुर्ताई, छत्तीसगढ़ की दहरोरी, गोवा की बेविनका, आंध्रप्रदेश की रवापसो, मध्य प्रदेश की भुट्टा खीर, त्रिपुरा की अव बगवी, मणीपुर की थोगवा, उत्तराखण्ड की सिगोधी, तमिलनाडू की पालन पोली, असं की नारी कोलर लड्डू, कर्नाटक का मसूर पाक, मेघालय का पूख्लोंन, और पंजाब की अमृत्सरी जलेबी। आधुनिकता के समय में चोकलेट भी पीछे कहाँ छूटने वाली थी उक्त मौके को भांपते हुए हलवाइयों ने विभिन्न चोकलेट फ्लेवर्ड मिठाईयां बनानी चालू करदी जो विभिन्न स्वाद में मिलती हैं। मिष्ठान निर्माताओं द्वारा मधुमेह रोगीयों को ध्यान में रखते हुए शर्करा फ्री मिठाइयाँ भी बनाई गयी जिससे मधुमेह रोगी भी पूर्ण स्वाद का आनंद ले सके।

हांलाकि इस लेख में पूर्ण प्रयास किया गया है कि भारत की सभी प्रमुख जगहों और राज्यों की मुख्य मिठाईयां शामिल रहें फिर भी भारत एक विशाल देश है एवं सब राज्यों एवं उनकी प्रमुख मिठाईयां इस लेख में शामिल किया जाना शब्दों की सीमा को देखते हुए संभव नहीं हो पा रहा है अतः जो स्वादिष्ट मिठईया यहाँ सम्मिलित होने से रह गयी है उनके निर्माताओं एवं वहां के निवासियों से उनका नाम नहीं आ पाने के कारण क्षमा प्रार्थी हूँ।

आजकल की स्त्री

इति शर्मा

सहायक लेखाधिकारी

यूं तो स्त्री होना मुझे हमेशा रास आया
लाखों कठिनाईयों और संघर्ष के बाद भी
अलग ही सुख नज़र आया।
लेकिन एक स्त्री होने का
असली मतलब तब समझ आया
जब मैंने इस रूप रंग को त्यागकर
एक 'माँ' का किरदार निभाया।
और माँ होने का सुख तो
संसार का सबसे बड़ा सुख है।
लेकिन एक बेटी की माँ होने का सुख
संसार के सभी सुखों से परे है।
जब उसने अपने नन्हें कदमों से
मेरा घर आंगन महकाया।
पूरी रात जागने के बाद भी
दिल को एक अलग सा सुकून आया।
और उसके बाद हर स्त्री के लिए
इज्जत को बढ़ा हुआ पाया।
कि कितना कुछ त्याग कर भी हमेशा
हर गम चुपचाप सहती आ रही है।
मेरी माँ जैसे हर स्त्री अपना किरदार
क्या बखूबी निभा रही है।

अपनी स्वतंत्रता, अपने सपने,
अपनी पूरी जिंदगी को पीछे छोड़कर
'क्या खाया' 'क्या नहीं खाया' को
हंसकर अपने जीवन में अपना रही है।
और यूं तो ये कोई बड़ी बात नहीं,
आज तक सबने ही ये काम किए हैं,
तुम पहली तो नहीं जिसने बच्चे किए हैं।
सच में मैं पहली तो नहीं हूँ,
लेकिन
मैं वो पहली बनना चाहती हूँ
जिसने स्त्री के इन बलिदानों को
महसूस करते हुए जमकर सराहा।
जिसने ऑफिस और घर
दोनों को संभालती स्त्री का
हमेशा हौसला बढ़ाया।
परिवार के साथ अपने कैरियर को
प्राथमिकता देती स्त्री को जज नहीं करके
''You Go Girl'' का नारा लगाया।
सराहना करती हूं मैं हर उसकी जिसने
Postpartam Depression झेलती
हर New Mom पर
ताने कसने की जगह
उसका साथ दिया, उसको आगे बढ़ाया।
क्योंकि जब एक स्त्री,
एक-दूसरे के लिए लडती है,

उसके साथ खडी होती है,
तब पूरी दुनिया पर
जीत उसी की होती है।
और ऐसी ''आजकल की लडकी'' होना
मुझे वाकई बहुत रास आया,
लाखों कठिनाईयों, संघर्षों के बाद भी
इसमें अलग सुख नज़र आया।

टूटते रिश्तों में मोबाइल की भूमिका

सुनिता गोयल

आमंत्रित रचनाकार

आधुनिकता की क्रांति में हमने जो सबसे बड़ी उपलब्धि हासिल करी है अगर उसमें सबसे पहला नाम मोबाइल का लिया जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। शायद इस पंक्ति को पढ़ने के बाद आपको आश्चर्यचकित होना लाजमी है लेकिन मेरे अनुसार मोबाइल ने जिस तरीके से प्रत्येक व्यक्ति को अपने जाल में जकड़ लिया है और व्यक्ति अपनी जिंदगी की कल्पना मोबाइल के बिना करना ही नहीं चाहता है उसे तो लगता है आधुनिक जमाने के इस आधुनिक उपकरण ने इंसान के दिल, दिमाग, मन, तन, भावनाएं, सभी पर आधिपत्य हासिल कर लिा है।

मोबाइल फोन को बनाने वाले मार्टिन कूपर ने कभी नहीं सोचा होगा कि मेरा यह आविष्कार हर व्यक्ति के इतना सर चढ़कर बोलेगा। बच्चा हो या बूढ़ा, अमीर हो या गरीब, मोबाइल हर हाथ में जरूर उपलब्ध होगा। यहाँ हम बात कर रहे हैं कि मोबाइल ने हमारी जिंदगी को बहुत आसान कर दिया है लेकिन हमें इस बात का इल्म भी नहीं है कि मोबाइल ने किस तरह से हमारे रिश्तों के बीच भी खुद की पैठ बना ली है। आज यह बात हमें साधारण सी प्रतीत हो रही है लेकिन समय रहते अगर व्यक्ति ने इस बात को नहीं समझा तो आने वाला वक्त हमें समझने का मौका भी नहीं देगा। रिश्तों में मोबाइल की भूमिका गले की फांस बन चुका है। दूर बैठे लोगों को तो जोड़ता है लेकिन आपके सामने बैठे व्यक्ति को आपसे बहुत दूर कर देता है। हमें पता भी नहीं चल पाता है कि किस प्रकार यह छोटा सा मोबाइल रिश्तों में दरार पैदा कर रहा है। और हमें भावात्मक रूप से सभी से अलग-थलग कर रहा है। यह हमारे रिश्तों की गहराई को खत्म करके तन्हाईयों की तरफ धकेल रहा है।

हम दुनिया में प्रत्येक कोने में रहने वाले व्यक्ति से तो जुड़ रहे हैं लेकिन हमारे पास में रहने वाले व्यक्ति से बिल्कुल अनभिज्ञ रहते हैं और जानते भी है तो उसकी जानकारी भी हम मोबाइल पर ही लेना चाहते हैं। क्या हम इतनी निर्जीव स्थिति में आ गये हैं कि पडोसी जिसकी दीवार हमारे घर से सटी हुई है, उसका दुःख सुख हम मोबाइल पर पूछे। शायद इस मोबाइल ने आपस में मिलकर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर, गले मिलकर, मुस्कुराकर आपसी संवाद को तो भुला ही दिया है। मानवीय जुड़ाव को हम भुला बैठे हैं। आधुनिकता की इस दौड़ में हम अपने परिवार को इस कदर भुला बैठे हैं कि यह छोटा सा उपकरण ही हमें हमारी पूरी दुनिया लगने लगा है।

कुछ सालों पूर्व जब मोबाइल नहीं थे तब माँ द्वारा बनाया गया भोजन पूरा परिवार एक ही स्थान पर बैठकर

बडे प्यार से हंसी-मजाक करते हुए खाता था। उस भोजन में प्यार था और माँ का निःस्वार्थ प्रेम था जो परिवार के हर व्यक्ति को दिखाई देता था। भोजन आज भी साथ किया जाता है लेकिन प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में अपना एक मोबाइल होता है और वह उसमें इतना बिजी होता है कि उसे पूरी तरह खाने का स्वाद भी मालूम नहीं होता है। माँ की आंखों में देखने की तो फुर्सत ही नहीं। पहले परिवार के साथ बैठना, बातचीत करना, हंसी मजाक करना जीवन के सबसे सुखद क्षण में माना जाता था ओर यही परिवार और उसके साथ बिताये गये सुखद पल ही व्यक्ति का अनमोल खजाना होता था। पति-पत्नी का रिश्ता प्रेम के आधार पर टिका होता है। इस रिश्ते में अगर भावात्मक जुडाव ही नहीं आपसी मजबूती ही नहीं तो इस रिश्ते का कोई महत्व नहीं रह जाता है। पति द्वारा स्टेटस डाला जाता है My Life My Wife इस स्टेटस को डालने के बाद पति यह सोचता है कि यह मेरी पत्नी को जिंदगी की सबसे बड़ी खुशी देगा। एक बार पढ़ने के बाद अच्छा लगता है। लेकिन घर में आने के बाद आपने यह पूछना भी उचित ना समझा तुम कैसी हो, तुमने भी खाना खाया क्या या फिर प्यार से मुस्कुराया हो तो शायद एक पत्नी को जो खुशी उसे स्टेटस से मिली उससे कई गुना खुशी आपके इस संवाद से मिलती है। अब तो हालत यह हो चुकी है कि बिस्तर पर जाने के बाद भी जब तक व्यक्ति चाहे तो पत्नी है या पति जब तक 2 घंटे मोबाइल में फेसबुक, इंस्टाग्राम चैटिंग ना कर ले दिन पूर्ण ही नहीं होता है।

स्टेटस डालना भी हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा हो गया है। आपने स्टेटस डाला पत्नी के लिए की तुम मेरी जिंदगी हो। यह हमारे माता-पिता द्वारा भी पढ़ा जाता है माँ के द्वारा यही सोचा जाता है सही है बेटे की जिंदगी सिर्फ उसकी पत्नी ही है। क्या दुनिया दिखावा इतना जरूरी है हम इन उपकरणों का उपयोग तो कर रहे हैं लेकिन हमें पता ही नहीं क्या गलत है क्या सही।

10 रु. की सब्जी खरीदने से पहले इतना सोचने और समझने की क्षमता रखने वाला व्यक्ति किसी उपकरण के प्रति इतना आसक्त हो जाये तो यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आप व्यक्ति ने अपनी सोचने और समझने की क्षमता खो दी है।

पहले का व्यक्ति अपने दिमाग का उपयोग बहुत ही बातों के लिए करता था लेकिन आज का व्यक्ति दिशा पता करनी है फोन है ना, रास्ता पता करना है, सामान मंगवाना है, माता-पिता को खुश करना है, बच्चे का स्कूल होमवर्क कुछ भी हो मोबाइल है ना। आज हम जो कर रहे हैं उसका असर हमारी आने वाली पीढ़ियों पर क्या होगा ये तो हम सोच ही रहे हैं। आज हमारे बीच ही भावनात्मक जुड़ाव मानवीय जुड़ाव नहीं तो हम आने वाली पीढ़ियों से क्या उम्मीद रख पायेंगे। पति-पत्नी का तलाक, भाई-बहन के रिश्ते में दरार, माता-पिता से दूरी, मित्रों का ना होना, समाज से ना जुड़ना इसका बड़ा और महत्वपूर्ण कारण मोबाइल ही है।

सार्थक बातचीत और आपसे संवाद के बना रिश्ते विकसित होना असंभव है। आने-अनजाने में सही हम अपनी खुशियों को एक उपकरण में ढूंढ रहे हैं जो कि सरासर गलत है।

पेड़ का आधार ही खोखला है तो नई पत्तियों का निर्माण भी कैसा होगा, यह हमें सोचने पर मजबूर करता है। हम चाहते हैं हमारा बच्चा या हमारा परिवार आपसी दुःख दर्द को समझ तो घर की बुनियाद आपसी संवाद, और व्यक्तिगत तालमेल पर रखें, मोबाइल से बढ़ता लगाव हमारे पारिवारिक रिश्तों में दरार पैदा कर रहा है। दरअसल बात यह है कि पहले मोबाइल सिर्फ हमारी जरूरत थी वहीं अब ये जरूरत हमारी लत बन चुकी है। एक ऐसा नशा जिसके बिना जिंदगी का एक पल भी गुजारना मुश्किल लगता है।

हम किसी भी उपकरण की महत्ता को नकार नहीं सकते हैं लेकिन उपकरण के कारण रिश्तों की कीमत चुकाकर है। हमारा परिवार, समाज, मित्र रिश्ते जीवन की सबसे सुनहरी पूंजी है इसे मिटने ना दें। व्यर्थ के प्रयोग से बचें।

माता-पिता का प्यारा सा स्पर्श, आशीर्वाद के लिए उठे हुए हाथ और माँ के द्वारा ली गई बलैया एक उपकरण कभी पूरी नहीं कर सकता है।

हम बदलेंगे देश बदलेगा।

स्वास्थ्य एवं हमारी दिनचर्या

संगीता गुप्ता

आमंत्रित रचनाकार

‘पहला सुख निरोगी काया।’ ‘स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है। ‘स्वास्थ्य ही धन है।’ ‘जो स्वस्थ है, वही सुखी है।’

ऐसी बहुत ही कहावतें आपने पढ़ी ओर सुनी होगी लेकिन इनका महत्व व्यक्ति को तभी पता लगता है जब वह स्वयं या उसका परिजन बीमार (अस्वस्थ) हो जाता है, उस समय वह सोचता है कि क्या कोई ऐसा तरीका है कि व्यक्ति अस्वस्थ होता हो। जी हाँ, एक तरीका है, जिसे सभी डॉक्टर दवा के साथ-साथ आपको बताते हैं कि ‘यह दवा खाओ और अपनी दिनचर्या ठीक करो।’ अब प्रश्न यह उठता है कि यह दिनचर्या क्या है, जिसे ठीक करना है और इसे ठीक करने हेतु सही ज्ञान हमें कौन देगा।

इस प्रश्न का सही और सटीक जवाब है ‘आयुर्वेद’। जी हाँ आयुर्वेद में सुबह उठने से लेकर रात्री सोने तक होने वाली प्रत्येक क्रिया हेतू नियम बताये गये हैं, अगर उसकी पालना की जाये तो हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। उन्हीं नियमों में से कुछ आवश्यक नियम संकलित कर यहाँ लिए जा रहे हैं, यह नियम हजारों वर्षो पूर्व लिखे गये थे किन्तु आज की आधुनिक जीवनशैली में भी यह उतने ही प्रासंगिक हैं-

1. **सूर्योदय से पूर्व उठना-** प्रातः जल्दी उठने से व्यक्ति प्रफुल्लित व तरोताजा रहता है। यदि किसी कारण से रात्री में देरी से सोना हुआ हो तो, जितनी देरी से सोये थे उसका आधा, अधिक सो सकते हैं।

2. **मल त्याग करना-** प्रातः जल्दी उठने वाले व्यक्ति को मल त्याग में परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता। फिर भी यदि आवश्यक हो तो एक गिलास गुनगुना पानी पीकर, स्वभाविक वेग आने पर भारतीय पद्धति के कमोड (यथासंभव) पर ही मल त्याग करना चाहिए।

3. **हस्त प्रक्षालन, दन्त धावन व मुख तथा नेत्र प्रक्षालन-** शौच निवृत्ति के बाद अच्छी तरह से हाथ धोकर एवं कुल्ला करना चाहिए। इसके बाद यथासंभव प्राकृतिक मंजन अर्थात् नीम, बबूल आदि की नर्म टहनी से या काली मिर्च, सौंठ, पिप्पली, चिफला, सरसों तेल सेंधा नमक आदि से तैयार मंजन प्रातः एवं रात्रि सोने से पहले दो बार करना चाहिए। इसके पश्चात ऋतु अनुसार शीत अथवा गुनगुने जल से मुख तथा आँखों का प्रक्षालन करना चाहिए। आंखों में गुलाब जल भी डाला जा सकता है। यह आपको दिनभर कम्प्यूटर अथवा मोबाइल पर काम करते वक्त आराम प्रदान करेगा।

वर्तमान में प्रदूषणयुक्त वातावरण में श्वांस व फेफड़ों से सम्बन्धित बीमारियां तेजी से फैल रही हैं इनसे बचने हेतु बादल वाले दिनों को छोड़कर अन्य दिनों में अपनी दोनों नाक में देशी गाय का घी अपनी तर्जनी अंगुली से लेकर लेप करना चाहिए।

4. व्यायाम– स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''व्यायाम वह कुंजी है जो जीवन के हर दरवाजे को खोल देती है।'' अतः शरीर के बल को बनाये रखने के लिए व मांसपेशियों के लचिलापन के लिए व्यायाम आवश्यक है। व्यायाम की मात्रा, तरीका प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग हो सकता है। सामान्य रूप से ललाट, हाथ-पैर या बगल से पसीना निकल जाए इतना ही काफी है। कभी-कभी अधिक व्यायाम से हृदय की गति बहुत बढ़ जाती है, उससे हृदय को बल मिलने के स्थान पर नुकसान भी हो सकता है। अतः टहलना सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए उत्तम व्यायाम है।

5. शरीर शुद्धि– प्रत्येक व्यक्ति को अपने नाखुन व बाल नियमित रूप से काटते रहना चाहिए। रोजाना अपने सिर की तथा सप्ताह में कम से कम 1 बार पूरे शरीर की तेल मालिश करनी चाहिए। मालिश के आधे घन्टे पश्चात ऋतु अनुसार जल से स्नान करना चाहिए। शरीर को पूरी तरह सुखाकर ही वस्त्र धारण करने चाहिए। अन्यथा चर्मरोग होने की संभावना रहती है। इसके पश्चात कुछ देर अपने ईष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

6. अल्पाहार एवं भोजन– आजकल कार्यालय पहुंचने की जल्दी में अल्पाहार किए बिना ही व्यक्ति कार्यालय को निकल जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है। अतः प्रातः गर्म दूध, अंकुरित दालें, फल, आदि का नाश्ता अवश्य करें तथा दोपहर में भूख लगने पर भोजन करें, भोजन से पहले या बाद में पानी नहीं पीना चाहिए यदि आवश्यक हो तो बीच में थोड़ा पानी पी सकते हैं। हमें प्रयास करना चाहिए कि हम समुचित भोजन करें। सन्तुलित भोजन वह है जिसमें सभी छः रसों का समावेश हो। छः रस निम्नानुसार है- मधुर, अम्ल, लवण, तीखा, कड़वा एवं कसैला।

7. वस्त्र एवं पदत्राण– कार्य हेतु घर से निकलते समय स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में सूती, हल्के रंग के तथा शीत काल में सूती या रेशमी व गहरे रंग के वस्त्र पहनने चाहिए। मलिन, काले रंग के एवं किसी अन्य के द्वारा पहने हुऐ वस्त्रों को धारण करने से बचना चाहिए। ऊंची ऐडी के जूते-चप्पल असुविधाजनक होने के साथ-साथ हमारे शरीर को नुकसान भी पहुंचाते हैं।

8. शयन कक्ष एवं निद्रा– दिन भर के क्रिया-कलाप के पश्चात शरीर की थकान मिटाने हेतु रात्री में विश्राम आवश्यक है। इस हेतु हमें ध्यान रखना है कि शयनकक्ष अल्प-प्रकाश, हवादार एवं दीवारों का रंग हल्का हो। हमारी शय्या सीधी होनी चाहिए। कम से कम छः से आठ घन्टे की गहरी नींद आवश्यक है। वर्तमान में हमें ध्यान रखना चाहिए कि सोने से कम से कम एक घन्टे पूर्व सभी प्रकार के उपकरण यथा मोबाईल, लेपटॉप, टी.वी. आदि से दूरी बना लेनी चाहिए।

एक शमा

तरुण सोनी

बाल रचनाकार

एक शमा है जो फिर किसी की आस जगाने जल जाती है
बस एक धीमी रोशनी ही राहों में प्यास जगाती है।
उडता है एक पखाना भी उसके बाहों में जाने को
पर बाहों से पहले मीठी जलन मिल जाती है
उस शीतल आस की गर्मी परवाने के पंख भी जला जाती है
एक शमा है जो फिर किसी की आस जगाने जल जाती है।

बेजान सा पडा पखाना बस उसकी लौ ही नहीं बुझ पाती है
चमकती उस शमा की रोशनी में जैसे उसकी निगाह टिक जाती है।
तपता रहता है वो उसके प्यार में
एक प्यास है जो जलन से और बढ जाती है
एक शमा है जो फिर किसी की आस जगाने जल जाती है।

बीतती हर घड़ी के साथ शमा की भी उम्र कट जाती है
पर एक जलन की प्यास तो दिल में उसके भी जाग जाती है।
भीगा-भीगा सा उसका प्यार मानो मोम बन कर कह रहा हो
मेरी उम्र भी तुझे लग जाए ऐसा वो चाहती है।
एक शमा है जो फिर किसी की आस जगाने जल जाती है

शमा के प्यार का पैगाम सुनकर परवाने की उम्मीद लौट आती है
बस शमा की रोशनी में जल कर खत्म हो जाऊँ
ऐसा उसकी रूह भी तो चाहती है।
पर एक फडफडाहट के साथ वो लौ भी शांत हो जाती है
एक शमा है जो फिर किसी की आस जगाने जल जाती है।

मेरे जीवन की रोचक यात्रा ''अण्डमान''

मदन लाल कोली
आमंत्रित रचनाकार

मैं महालेखाकार कार्यालय से दिनांक 31 मार्च 2015 को लेखा परीक्षा अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुआ था। सेवानिवृत्ति के पश्चात मैंने मेरी भारत-भूमि के मुख्य दर्शनीय स्थानों की यात्रा करना चाहा। यह भूमि इतनी पवित्र है कि मनुष्य तो क्या इस पर देवता भी भ्रमण करना चाहते हैं क्योंकि कहा गया है कि

''चन्दन है इस देश की माटी बच्चा बच्चा राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा सत्य बोलना इनका काम है।''

इस उद्देश्य से मैं मेरी धर्मपत्नी तथा बच्चे के साथ भारत भूमि के दक्षिण-पूर्व छोर पर स्थित अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में घूमने की योजना बनाई। मैंने जयपुर नेहरू कॉम्पलेक्स में स्थित एयर इण्डया के कार्यालय से दिल्ली होते हुए तीन टिकिट एयर इण्डया विमान के आने व जाने के लिये जो मैंने 15 दिन पूर्व में ही ले लिए थे। निर्धारित समय पर मैं और मेरा परिवार मेरे निवास स्थान से जयपुर एयरपोर्ट पहुंच गया। जीवन में प्रथम बार हवाई जहाज में बैठ कर यात्रा करने की ललक थी। मई 2017 की बात है करीब करीब सायंकाल 4 बजे हमने हमारे लगेज तथा हमारी चेकिंग करवाकर 5 बजे जयपुर से दिल्ली वायूयान से यात्रा की। लगभग 30 मिनिट में ही हमारा वायूयान दिल्ली पहुंच गया।

एक दिन का विश्राम दिल्ली में करने के बाद, दूसरे दिन प्रातः 5 बजे एयर इण्डया के वायूयान से यात्रा कर करीब 9 बजे हम 'पोर्ट ब्लेयर' में वीर सावरकर एयरपोर्ट पर उतरे। वहां पर हमारा यात्रा एजेन्ट ''करिअप्पा'' हाथ में मेरे नाम की प्लेट लिए खड़ा था। उसने अपनी टेक्सी में लेकर एक होटल ''प्लेटो'' में ठहराया। लगभग 5 घण्टे विश्राम करने के बाद उसने हमको पोर्ट ब्लेयर के आस-पास के दर्शनीय स्थानों पर भ्रमण कराया। पोर्टब्लेयर के आस-पास भ्रमण करने के पश्चात भोजन किया तथा रात्री विश्राम हेतु होटल प्लेटो में चले गये। अण्डमान द्वीप पर लगभग 10 दिन ठहरने पर निम्न स्थानों की यात्रा की।

1. पोर्ट ब्लेयर- पोर्ट ब्लेयर अण्डमान निकोबार केन्द्रशासित प्रदेश की राजधानी है। यह शहर ऊंची नीची पहाडी तथा समतल स्थान पर बसा हुआ है। यह सुन्दर शहर चारों तरफ समुद्र से घिरा हुआ है जिसके एक ओर समुद्र सुन्दर, स्वच्छ पानी का किनारा जिस पर बैठने की जगह लकडी की बेंचे लगी हुई थी, लोग समुद्र में स्नान कर रहे थे। कुछ लोग बेंच पर बैठकर चना-मसाला खा रहे थे। दूसरी ओर पानी के जहाजों का पोर्ट बना हुआ था जहां से मालवाहन तथा यात्री पानी के जहाज रवाना होते तथा ठहरते थे। तीसरी ओर एक सुन्दर सा उद्यान जिसमें

राजीवगांधी का स्टेच्यू एक तरणताल तथा जलपान गृह बने हुए हैं। चोथी ओर मिनी बसों का ठहराव स्थल है जिन लोगों को बसों से यात्रा करनी है। वो बसों से स्थानीय यात्रा कर सकते हैं। पोर्ट ब्लेयर शहर लगभग 4 किमी. में बसा हुआ सुन्दर शहर है। जिसमें वीर सावरकर एयरपोर्ट, पानी के जहाजों का पोर्ट, समुद्र किनारा, पार्क तथा ठहरने-खाने के तरह-तरह के विश्राम स्थल (होटल-रेस्टोरेन्ट) है।

पोर्ट ब्लेयर शहर के बीचों-बीच सेल्यूलर जेल बनी हुई है जिसमें भारत की आजादी के लिये लडाई करने वालों को अंग्रेज अफसर काले पानी की सजा देते थे। उन स्वतंत्रता सेनानियों को उसमें बन्द रखा जाता था। इस जेल में रात्री आठ बजे एक लाइट तथा साउण्ड शो भी किया जाता है जिसमें जैल के हर कमरे से उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज विद्युत, तरंगों के साथ सुनाई देती है। उस शो को देखने-सुनने के बाद प्रत्येक भारतीयों में देशप्रेम जागृत हो जाता है क्योंकि अंग्रेजों द्वारा हमारे देश तथा देशवासियों पर कितने जुल्म किये उनकी कहानी उजागर होगी है। सेल्यूलर जेल के बाहर स्वतंत्रता सेनानियों की स्टेच्यू लगी हुई है। पूरा शहर सफाई-पर्यावरण को ध्यान रखकर सारी व्यवस्था है हवाई अड्डे का नाम वीर सावरकर के नाम से रखाा गया है क्योंकि सावरकर को यहां रखा गया था। यहां की सड़कें साफ-सुथरी, शुद्ध जल की तथा परिवहन की उचित व्यवस्था है।

2. रॉस द्वीप– पोर्ट ब्लेयर से 40 कि.मी. की दूरी पर रास द्वीप स्थित है यहां पर छोटे जहाज से पहुंचा जाता है यह छोटे जहाज बडी तीव्र गति से चलते हैं। लगभग 1 घण्टे में यहां पहुंचा जाता है। यहां पर अंग्रेजों द्वारा बनाये गये ओपनीवेशिक भवनों के खण्डहर है। यहां पर मोर, हिरण, उपकटिबन्धीय पक्षी देखने को मिलते हैं। यह द्वीप लगभग 10 कि.मी. भूभाग में फेला हुआ है। नारियल वृक्षों की यहां भरमार है। यहां पर कच्चा आम साल भर मिलता है।

3. हेवलॉक द्वीप– पोर्ट ब्लेयर से 50 कि.मी. दूर हेवलॉक द्वीप है। यहां पर भी छोटे जहाज से पहुंच सकते हैं। यहां हवा में ऑक्सीजन की कमी आ जाती है। अतः दवा साथ रखनी होती है। इस द्वीप पर सफेद रेत समुद्र का नीला पानी के साथ ही राधानगर और अलीफेन्ट किनारा (बीच) यहां हाथी की सवारी भी मिल जाती है। यह करीब 15 कि.मी. चोडाई-लम्बाई बाला द्वीप है इसके एक ओर काली सफेद रेत है। समुद्र में स्नान करने के पश्चात शुद्ध पानी से स्नान करने के बाथरूम भी यहां बने हुए है। सूर्यास्त का दृष्य यहां रोचक होता है।

4. नील द्वीप– यह द्वीप शान्त और आरामदायक जगह के लिये प्रसिद्ध है। इस पर 'डोलफिन' होटल में हम एक रात्री विश्राम किया था इस द्वीप पर रात्री में समुद्र का पानी करीब एक फीट उपर आ जाता है। इस द्वीप पर समुद्री जीव-शीप-घोंघे शंक, कोडिया तथा अन्य जानवरों के खोल किनारे पर पाये जाते हैं। यहां पर सुनामी ज्यादा आती है। इसलिये मकान, होटल, दुकानों के नीचे की मंजिल पिल्लरों से बनाकर खाली रखते हैं। यहां पर शाकाहारी तथा मांसाहारी खाना मिल जाता है। पोर्ट ब्लेयर से इसकी दूरी करीब 60 कि.मी. है।

5. बाराटाग द्वीप– पोर्ट ब्लेयर से लगभग 100 कि.मी. दूर सडक मार्ग से ही इस द्वीप पर जा सकते हैं। यहां चारों तरफ घने जंगल है। इन जंगलों में आज भी आदि मानव जिसे ''जारवा'' जल जाती का दर्जा दिया हुआ

है। भारत सरकार द्वारा इन्हें संरक्षण किया गया है। इसलिए इस द्वीप की यात्रा पुलिस संरक्षण में की जाती है। ''जारवा'' लोग जंगल में बिना कपड़ों के रहते हैं। उनको बीमार होने पर पोर्ट ब्लेयर लाया जाता है तथा सरकारी खर्चे पर इलाज कर वापस जंगल में छोड दिया जाता है। बारांटाग द्वीप घनघोर जंगल जहाँ पेड 200 से 500 फीट ऊंचे हैं। बीच में एक नदी है जिसे नाव से पार करना होता है। यह द्वीप प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध है। यहां आने पर पता चलता है जैसे हम हमारे नगर भूभाग से दूर हो गये हैं।

6. चूना पत्थर की गुफाऐं– बाराटांग से लगभग 20 किमी दूर समुद्र में एक ऐसी गुफा बनी हुई है जिसमें अपने आप चूना रिसता है। इसमें नाव से पहुंचते हैं जो बहुत ही छोटी होती है। जो नीचे पानी तथा ऊपर चूने की गुफा इस गुफा में प्राकृतिक चूना रिसकर कई आकृतियां बनाता है जैसे मोर-शेर, हाथी तथा देवी-देवताओं की आकृति। इस गुफा को 'लाइम स्टोन केव' कहते हैं। यहां का दृष्य अति सुन्दर दिखाई देता है।

7. वाइपर द्वीप– यह द्वीप लगभग 5 कि.मी. चोडा लम्बा है इस पर नारियल के पेड बहुत हैं तथा पानी में 40 फीट नीचे समुद्री दुनिया जिसमें कई जीव, मछली, घोंगे तथा समुद्री जीव है। उसके लिये 10 मिनिट प्रशिक्षण देने पर 2000/- रुपये वसूल कर नीचे ले जाकर ऑक्सीजन के सिलेंडर से श्वास दी जाती है। पर्यटक की सीडी बनाई जाती है। 30 मिनिट बाद ऊपर लाया जाता है। यह द्वीप अनोखी दिनचर्या के लिये प्रसिद्ध है। इस द्वीप पर समुद्री जीव तथा मानव का तालमेल है। एक ही द्वीप पर समुद्र के अन्दर रहने वाले जानवरों को देखा जा सकता है।

8. नार्थ वे द्वीप– नार्थ वे द्वीप एक शान्त द्वीप है जो जल-क्रीड़ाओं के लिए प्रसिद्ध है। यहां सुन्दर प्रवाल भित्तियां है जिन्हें स्नार्कलिंग या ग्लास वोट्स के जरिये देखा जा सकता है।

9. चिडिया टापू– इस द्वीप की आकृति चिडिया के समान है। आगे का हिस्सा सिर चोंच की तरह तो पीछे का हिस्सा एक पूंछ की तरह से है। यहां पर पक्षियों का घनत्व है। इस द्वीप पर पक्षी तरह-तरह के पक्षी निवास करते हैं। उनका घोंसले भी अलग-अलग बने हुए है। यहां पर 24 घन्टे पक्षियों की चहचहाट रहती है। यह द्वीप पक्षी-मानव के सामन्जस्य का है।

अण्डमान द्वीप के पास ही निकोबार द्वीप है जिस पर भारतीय नौ सेना का मुख्यालय है जिस पर आम नागरिकों का जाना वर्जित है। अण्डमान 150 द्विपों का एक समूह यहां पर वायूयान द्वारा तथा समुद्री जहाज से पहुंचा जा सकता है, सितम्बर से मार्च तक यात्रा करना सही है। यहां पर गर्मी अधिक पड़ती है इसीलिये हर होटल में ए.सी. लगा होता है। हमारे देश के उत्तरी भाग की अपेक्षा दो घण्टे पूर्व ही सूर्यास्त हो जाता है। यहां पर एक द्वीप की तस्वीर तो पुराने 20 रुपये के नोट पर भी है। स्वतंत्रता सेनानियों को काला-पानी की सजा यहां दी जाती थी इसलिये सम्पूर्ण भारत के लो गयहां पर मिल जाते हैं। यहां पर हिन्दी, तमिल, कन्नड, मराठी, अंग्रेजी, मलयालम, भोजपुरी आदि भाषाएं बोली जाती है। यहां पर शाकाहारी भोजन सस्ती दरों पर उपलब्ध है। यह द्वीप प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर हमारे देश का अभिन्न अंग है। जिसे भारत का स्वर्ग कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जय अण्डमान-जय भारत। इस देश के सुन्दर दक्षिणी पूर्व छोर की यात्रा का वर्णन मेरे द्वारा किया गया है।

श्री अक्षय मोहन खंडारे, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं श्री शुभम सिन्हा, उप महालेखाकार (लेखा) दीप प्रज्वलन कर हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का शुभारम्भ करते हुए

श्री अक्षय मोहन खंडारे, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का स्वागत करते हुए सहायक निदेशक डॉ. सुभाष चंद यादव

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा व हकदारी)
राजस्थान, जयपुर
हिंदी पखवाड़ा समारोह
में
आप सभी का हार्दिक स्वागत है।

श्री अक्षय मोहन खंडारे, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), हिंदी पखवाड़ा समारोह को संबोधित करते हुए

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित करते हुए श्री शुभम सिन्हा, उप महालेखाकार (लेखा)

हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान उपस्थित कार्मिक

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान उपस्थित राजभाषा अनुभाग स्टाफ

संयोजक
र्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा व हक)
राजस्थान, जयपुर

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
OFFICE OF THE COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA
ऑडिट दिवस २०२५
Audit Diwas 2025
CAG Awards 2025